चैतन्य लहरी

खंड : XV अंक : 11 व 12

नवम्बर - दिसम्बर, 2003

3 गुरुपूजा, कबेला, 13 जुलाई, 2003

4 श्रीमाताजी की पेरिस यात्रा

7 विवाह की छप्पनवीं वर्षगांठ – 7 अप्रैल, 2003

10 श्रीमाताजी का एक पत्र– 2अगस्त, 2003

11 ईसा मसीह पूजा, लंदन, 10.12.1979

25 श्रीमाताजी का प्रवचन–बम्बई, 27 मई, 1976

37 सत्–चित्त–आनन्द–
15 फरवरी, 1977, नई दिल्ली

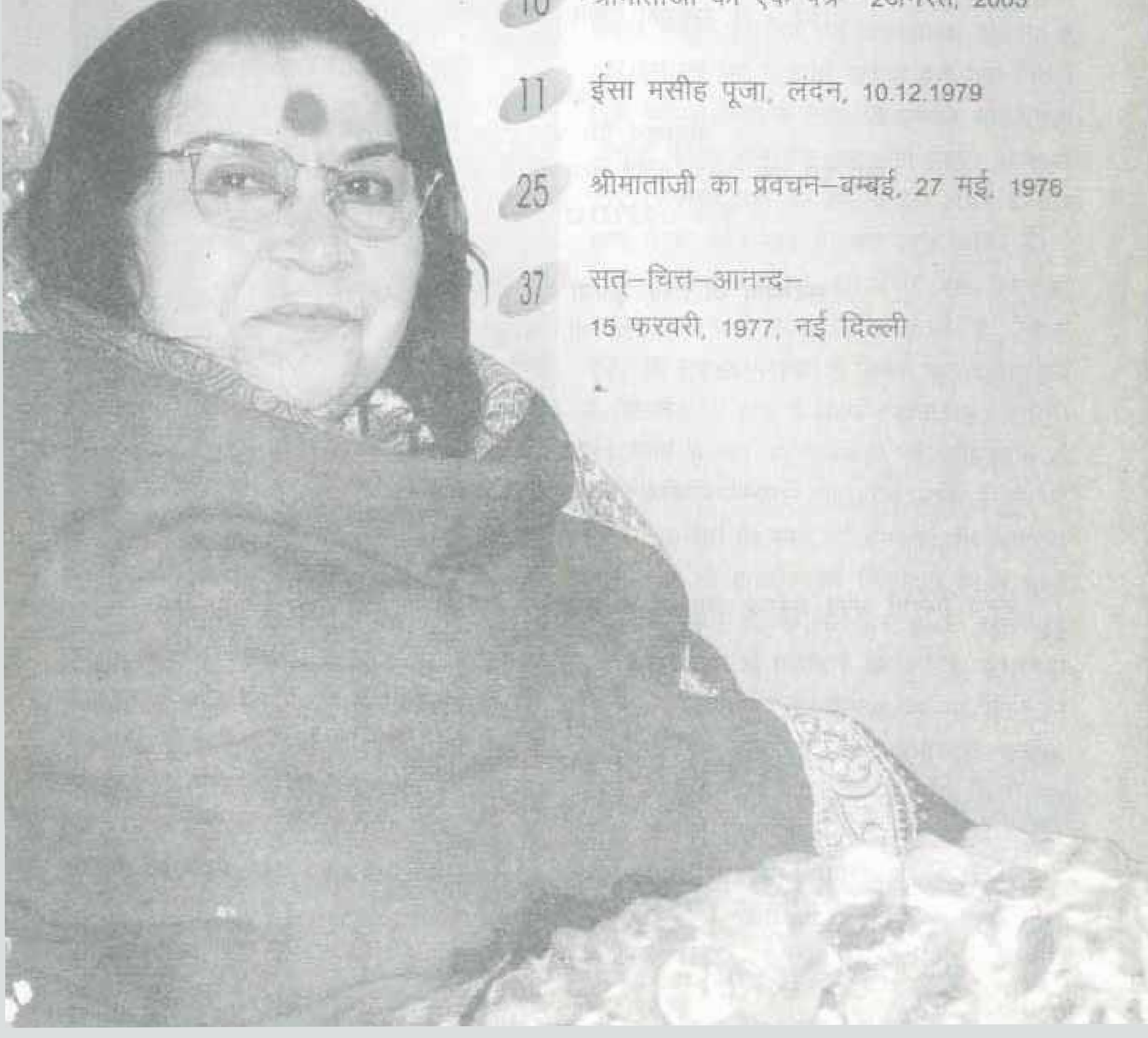

चैतन्य लहरी

प्रकाशक
वी.जे. नलगीरकर
162 – ए, मुनीरका विहार, नई दिल्ली – 110067

मुद्रक
अमरनाथ प्रैस प्रा. लिमिटेड
डब्ल्यू एच एस 2/47, कीर्ति नगर औद्योगिक क्षेत्र, नई दिल्ली-15
फोन : 25921159, 55458062

सदस्यता के लिए कृपया इस पते पर लिखें :-

श्री ओ. पी. चान्दना
एन – 463 (जी-11), ऋषि नगर, रानी बाग
दिल्ली – 110034
फोन : 27031889
E-mail : chaitanyalahiri@indiatimes.com

सहज सम्बंधी अपने अनुभव, चमत्कारिक फोटोग्राफ तथा कलाकृतियाँ निम्न पते पर भेजें :

चैतन्य लहरी
सहजयोग मंदिर
सी-17, कुतुब इन्स्टीच्यूशनल एरिया
नई दिल्ली – 110016

गुरु पूजा

कबैला, 13 जुलाई 2003

परम पूज्य माताजी श्री निर्मला देवी का प्रवचन

आज की पूजा मेरे लिए बहुत महान पूजा है क्योंकि अचानक मुझे पता चला कि मेरी नातिन की बेटी गुम है और इस कारण मैं विचलित हो गई। मुझे देखें, मैं आदिशक्ति हूँ, तो नातिन की बेटी के खो जाने पर मुझे विचलित क्यों होना चाहिए! यह मानव स्वभाव है और मैंने महसूस किया कि यह स्वभाव हम सबमें है।

जहाँ भी हमारी कोई ज़िम्मेदारी हो और वहाँ पर हम उपस्थित न हों तो हम विचलित हो जाते हैं। परमात्मा का शुक्र है कि यहाँ पर बहुत कम बच्चे हैं, उनमें से अधिकतर जा चुके हैं। परन्तु जिस प्रकार से हम चिन्ता करते हैं और उत्सुक होते हैं, हम सब भी बच्चे ही हैं। आज मैं आप सबको कहना चाहूँगी कि नव वर्ष का आरम्भ हो गया है और इस नव वर्ष में हमारे सम्मुख एक नया प्रस्ताव होना चाहिए। लोगों के लिए यह प्रस्ताव समझ पाना अत्यन्त कठिन होगा कि हम लोग किसी अन्य के लिए ज़िम्मेदार नहीं हैं। हम केवल अपने हैं और स्वयं में ही लीन रहते हैं। यह बहुत कठिन है।

जिन लोगों के बच्चे नहीं हैं वो एक प्रकार से अत्यन्त प्रसन्न हैं परन्तु जिनके बच्चे हैं, जिनके कन्धों पर कुछ ज़िम्मेदारियाँ हैं, जिनके कुछ उत्तरदायित्व हैं, वो अब भी हवा में लटके (डांवाडोल) हुए हैं। मैं अवश्य ये बात कहूँगी कि ये लोग सहजयोग के कहीं समीप भी नहीं आए। हम स्वयं ही अपनी मुख्य ज़िम्मेदारी हैं। स्वयं को समझना और स्वयं पर निर्भर होना ही हमारी मुख्य ज़िम्मेदारी है। ये बहुत बड़ी ज़िम्मेदारी है क्योंकि अब हमारे बहुत बड़े उत्सव होंगे और हो सकता है कि हमें ये महसूस हो कि हम इनमें खो गए हैं। कृपया यह याद रखने का प्रयत्न करें कि आपने स्वयं को कभी नहीं भुलाना। हमेशा याद रखना है कि आप विद्यमान हैं। मैं यह संदेश आपको देना चाहती थी, मुझे आशा है कि आप इसके विषय में सोचेंगे।

परमात्मा आप सबको धन्य करें।

श्री माताजी की पैरिस यात्रा

शनिवार, 02 अगस्त, 2003

पिछले सप्ताह श्रीमाताजी के अचानक पैरिस आ जाने के आनन्द का संक्षिप्त वर्णन हम यहाँ कर रहे हैं। 24 घण्टों से भी कम समय की पूर्व सूचना पाकर भी फ्रांस के सहजयोगियों ने श्री आदिशक्ति के स्वागत की तैयारी पूर्ण की। सर सी.पी. श्रीवास्तव के साथ मुम्बई जाते हुए उन्होंने पैरिस में रुकना था।

प्राय: श्रीमाताजी बुधवार के दिन यात्रा नहीं करतीं इसलिए हमें दोहरा आशीर्वाद प्राप्त हुआ, क्योंकि मिलान से आई उनकी उड़ान मंगलवार शाम को पैरिस पहुँची थी और उनके साक्षात् में 36 घण्टे उपस्थित रहने का शुभ अवसर हमें प्राप्त हो गया था। कुछ वर्ष पूर्व रोएसी वायु पतन (Roissy Air Port) स्थित हिल्टन होटल के स्मरणीय अनुभव के आधार पर एक बार फिर हमने वहीं पर श्रीमाताजी और सर सी.पी. का स्वागत करने के लिए तीन कमरों का एक सैट (suite) चुनने का निर्णय किया। तैयारी के लिए केवल कुछ ही घण्टे बाकी थे। अत: योगियों एवं योगिनियों ने निर्विचार समाधि में रहते हुए कमरों की सफाई, उन्हें चैतन्यित करने और सजाने के लिए जी-जान लगा दी।

श्रीमाताजी का विमान पहुँचने के समय से आधा घण्टा पूर्व, लगभग साढ़े आठ बजे सायं, होटल के कमरों को ठीक-ठाक करने वाले सहजयोगियों की टीम ने श्रीमाताजी के शयनकक्ष, स्नानागार, बैठने का कमरा आदि को सजाने का कार्य पूर्ण किया और ध्यान में बैठकर धड़कते दिलों से श्रीमाताजी के आगमन की प्रतीक्षा करने लगे।

वायु पतन पर वो सब सौभाग्यशाली सहजयोगी एकत्र हुए जो छुट्टी मनाने के लिए बाहर नहीं गए थे और शहर में मौजूद थे। तेजोमय चेहरे से मुस्कान बिखेरती हुई श्रीमाताजी जब पहुँचीं तो प्रथम शब्द जो उन्होंने कहे वो इस प्रकार थे : "आप लोगों की इच्छा इतनी तीव्र थी कि मुझे यहाँ आना ही पड़ा!" उन्होंने पुष्प स्वीकार किए। तत्पश्चात् उन्हें प्रतीक्षा करती हुई कार में बिठाया गया, जिसके द्वारा वे होटल पहुँचीं।

श्रीमाताजी के स्वास्थ्य के विषय में अफवाहों के कारण हम सब चिन्तित थे और समझ न पा रहे थे कि हमें क्या करना होगा। मस्तिष्क से सोचने पर हमें ये लगता था कि श्रीमाताजी थकी हुई होंगी और उन्हें निरंतर आराम की आवश्यकता होगी। संभवत: इस ठहराव के दौरान वे अपने कमरे से बाहर ही न आएं। किसी भी प्रकार से उन्हें परेशान नहीं किया जाना चाहिए। परन्तु श्रीमहामाया ने क्षण भर में हमारे ये सब बन्धन और चिन्ताएं छिन्न-भिन्न कर दीं। उनकी कान्ति, ऊर्जा एवं गरिमा हमें चैतन्य के संसार में उड़ा कर ले गई। उस संसार में जहाँ समय की गति रुक जाती है और जहाँ सभी कुछ संभव है। फ्रांस की शुष्क ग्रीष्म ऋतु की असहनीय गर्मी के मुकाबले में बुधवार के सूर्योदय होते ही अत्यन्त सुखद मौसम बन गया। आकाश का रंग नीला हो गया। श्रीमाताजी खरीददारी के लिए बाहर जाने को सहमत हो गईं। तेजी से तैयारी की गई, और दोपहर के तुरन्त पश्चात् दो गाड़ियाँ पैरिस के सुप्रसिद्ध विपणन केन्द्र प्लेस वेनडोम (Place Vandome) की ओर रवाना हो गईं।

श्रीमाताजी ने अपने तथा अपने परिवार की महिलाओं के लिए साड़ियों का कपड़ा चुना। वहाँ पर उपस्थित योगियों का कहना था कि श्रीमाताजी को खरीददारी करते हुए देखकर उनके नाभिचक्र

पूरी तरह से खुल गए हैं। सूक्ष्म स्तर पर हमने पैरिस और फ्रांस देश के लिए श्रीमाताजी की कृपा को महसूस किया क्योंकि फ्रांस देश में उदारता का बिल्कुल महत्व नहीं है। बहुत हिम्मत करके माजिद श्री माताजी को फ्रेंच सामूहिकता की ओर से वो साड़ियाँ भेंट करने में सफल हुआ। उस देश के लिए यह बहुत बड़ा वरदान था जो बहुत बार आदिशक्ति के विरुद्ध खड़ा हुआ।

होटल वापिस आते हुए श्रीमाताजी ने कार में थोड़ा सा आराम किया और वहाँ पहुँचकर एक बार फिर वे आनन्द एवं ऊर्जा से परिपूर्ण थीं। रात का खाना खाने के पश्चात् उन्होंने एक योगी से पूछा कि सभी सहजयोगी कहाँ हैं। उसने उत्तर दिया कि सभी लोग मोंटफर्मेल (Montfermeil) मुख्य आश्रम में ध्यान कर रहे हैं। माजिद ने सुझाया कि अगली सुबह सभी लोग उन्हें विदा करने के लिए आ सकते हैं। परन्तु श्रीमाताजी तभी योगियों से मिलना चाहती थीं।

तुरन्त फोन किए गए और एक कार भेजी गई ताकि अधिक से अधिक सहजयोगियों को लाया जा सके। परन्तु पलक भर में ही होटल में उपस्थित हम लोगों को श्रीमाताजी के हॉल कमरे में बुलाया गया। प्रवचन देने के लिए वे हमारा इन्तज़ार कर रही थीं। फ्रांस तथा विदेशों के लगभग बीस योगी वहाँ उपस्थित थे।

श्रीमाताजी ने होटल में मूल सुविधाओं की कमी के बारे में कहा कि सारा फर्नीचर कैसा है तथा होटल की प्रसिद्धि के बावजूद भी वहां कोई मूल सुविधा नहीं दी जाती। उन्होंने हमें होटल प्रशासन को हमारी असन्तुष्टि के विषय में लिखने को कहा। उन्होंने कहा कि सर सी.पी., चाहे वे सन्तुष्ट न भी हों फिर भी इतने कूटनीतिक हैं कि उनके लिखने का कभी कोई परिणाम नहीं हुआ। तब सर सी.पी. ने कूटनीतिज्ञों के बारे में एक चुटकुला सुनाया कि किस प्रकार वे कहते हैं, "एक ओर तो ऐसा है और दूसरी ओर ऐसा है। परिणामस्वरूप अब लोग ऐसे कूटनीतिकों की प्रतीक्षा करते हैं जो केवल एक हाथ पर हों।

श्रीमाताजी ने कहा, कि वे इसी क्षेत्र में कुछ ज़मीन खरीदने के विषय में सोच रही हैं जिस पर होटल बनाकर वो फ्रैंच लोगों को दिखाएंगी कि वास्तव में सुविधाएं क्या होती हैं। ज्यों ही हमारी बाई विशुद्धियां पकड़ने लगीं कि हमने कैसा होटल ले लिया कि श्रीमाताजी प्रसन्न नहीं हैं तभी श्रीमाताजी ने ये कहकर हमें शान्त किया कि होटल बड़ी सुविधाजनक स्थान पर स्थित है तथा हमारे परस्पर मिलने के लिए तथा सहजयोग के लिए ये बहुत अच्छा स्थान है। जो दो सहजयोगी उसी होटल में काम करते हैं, वे शीघ्र ही वहाँ सहज कार्य क्रम आरम्भ करेंगे।

श्रीमाताजी ने हमें आशीर्वाद दिया और हमने विदा ली तथा श्रीमाताजी अपने कमरे में आराम करने चले गए। परन्तु अभी रात जवान थी! कुछ ही क्षणों के बाद श्रीमाताजी ने माज़िद को सुझाया कि बाहर कार पर घूमने के लिए चलें। रात के लगभग ग्यारह बजे थे। जिन योगियों के पास कारें थी, इस समाचार को सुनकर उन्होंने अपनी कारों की चाबियाँ संभालीं और जिनके पास कारें न थीं वे उपलब्ध सीटों पर लपके। सहजयोगियों की पाँच कारें नीले रंग की 'प्युगोट-607' के पीछे चलने को तैयार हो गईं, कोई न जानता था कि कहाँ जाना है।

अपनी गाड़ी में बैठकर श्रीमाताजी ने पूछा, "तो

कहाँ चलें?" गाड़ी चला रहे क्रिस्टीन और माजिद ने परस्पर बात की। बुधवार रात के ग्यारह बजे रोएसी हवाई अड्डे से कहाँ जाया जाए। क्रिस्टीन को यहाँ से पन्द्रह मिनट की दूरी पर जमींदारी किस्म के एक होटल का अंदाजा था क्योंकि हमने श्रीमाताजी के लिए होटल खोजते हुए इंटरनेट पर होटलों की सूची खोजी थी।

थोड़ी देर चलने के बाद कारों का समूह होटल की ड्राइव लेन में पहुँचा। होटल की लॉबी में प्रवेश करते ही श्रीमाताजी की दृष्टि वहाँ प्रदर्शित की गई प्राचीन वस्तुओं पर पड़ी। स्वागत कक्ष पर स्वागती (Receptionist) ने बताया कि वो सब चीज़ें बिकाऊ हैं परन्तु वह उन अल्मारियों की चाबियाँ न खोज सकी। कुछ देर खोजने के बाद चाबियाँ मिल गई और श्रीमाताजी ने उसमें रखी कई चीज़ों को गौर से देखा। कुछ अन्य अल्मारियाँ भी खुली हुई थीं और सभी सहजयोगियों तथा होटल कर्मचारियों के आश्चर्य एवं खुशी का ठिकाना न रहा जब श्रीमाताजी ने उनमें से कुछ वस्तुएं खरीदीं।

श्रीमाताजी ने अपने होटल वाफ्सि जाने का निर्णय किया जहाँ पर श्रीमाताजी का संदेश पाकर अब तक बहुत से सहजयोगी एकत्र हो गए थे। श्रीमाताजी के कमरों के बाहर बरामदों में वो सब पंक्ति में खड़े थे। अन्दर जाकर श्रीमाताजी और सर सी.पी. ने खाना खाया। रात्रि का ये अन्त न था क्योंकि अगला कार्यक्रम एक हिन्दी फिल्म थी जो प्रातः चार पाँच बजे तक चली।

अगली सुबह लाल, तोतई फूलों की कढ़ाई वाली सुन्दर सफेद साड़ी में दमकते हुए, हमेशा की तरह से तरोताज़ा, श्रीमाताजी ने साढ़े सात बजे चाय ली। दो सौ किलो से भी ज्यादा सामान हवाई अड्डे पर जा चुका था जिसके वजन के कारण माजिद थोड़ा सा परेशान था क्योंकि केवल चार व्यक्तियों ने यात्रा करनी थी। परन्तु चैतन्य की कृपा के कारण सभी कुछ सहजता से हो गया क्योंकि जाँचने वाले क्लर्क को ये चिन्ता थी कि सारे बैगों पर अच्छी तरह से लेबल लगें तथा यात्री का नाम लिखा जाए। वह इतनी व्यस्त थी कि वह बैगों की संख्या और उनके वजन के बारे में भूल गई।

शीघ्र ही श्रीमाताजी और सर सी.पी. हवाई अड्डे पर आ गए। सर सी.पी. ने कहा कि उनकी पैरिस यात्रा को केवल 'स्मरणीय' भर कहना अत्यन्त छोटी बात होगी। श्रीमाताजी सभी उपस्थित लोगों की ओर देखकर मुस्काई और आनन्दमयी उदासी से हमारे हृदय भर गए। वे जा रही हैं, परन्तु वे आई तो हैं।

परम पूज्य माताजी श्री निर्मला देवी के विवाह की छप्पनवीं वर्षगांठ

सोफिया कॉलेज सभागार, मुम्बई

7 अप्रैल, 2003 सायं 6.30 बजे

छोटे-छोटे सुनहरी सितारों की चित्रकारी वाली लाल रंग की साड़ी पहने परम पूज्य श्रीमाताजी हमेशा की तरह से अत्यन्त सुन्दर एवम् स्वस्थ प्रतीत हो रही थीं। उनके दैदीप्यमान मुख से किरणें फूट पड़ रही थीं। जिस सिंहासन पर श्री माताजी विराजमान थीं उसे प्राय: बेलापुर अस्पताल में रखा जाता है। श्री माताजी को भेंट करने के लिए बहुत से लोग फूल लेकर आए थे। उनमें से कुछ फूलों को मंच सजाने के लिए उपयोग किया गया। पूरे भारतवर्ष से इस समारोह में भाग लेने के लिए लोग आए थे जिनमें से कुछ उस शाम के लिए समारोह में विमान द्वारा पहुंचे थे। कुछ विदेशी लोग भी वहाँ उपस्थित थे परन्तु मुम्बई एवम् महाराष्ट्र के सहजयोगियों की संख्या सबसे अधिक थी।

सर्वप्रथम श्री माताजी का स्वागत करने के लिए मुम्बई की सात महिलाओं ने उनकी आरती उतारी। तत्पश्चात् स्थानीय सहजयोग केन्द्रों के बच्चों ने जोड़ों में आकर श्री माताजी तथा सर सी.पी. को पुष्प अर्पण किए। हर युगल किसी देवता और उसकी शक्ति के परिधान में था।

इसके पश्चात् एक युवक श्री माताजी के सम्मुख आया, उसने शरीर पर विभूति (राख) मली हुई थी और भगवान शिव की पारम्परिक शैली में उसके बाल बन्धे हुए थे। सफेद साड़ी पहने, हाथ में वीणा उठाए, सौन्दर्य मूर्ति एक लड़की श्री सरस्वती के रूप में श्री माताजी के सम्मुख उपस्थित हुई तथा एक अन्य व्यक्ति जिसने सफेद चोगा पहना हुआ था, नकली दाढ़ी और लम्बे बाल लगाए हुए थे, वो श्री ईसामसीह के रूप में आया। एक-एक युगल मंच पर आकर जब परमेश्वरी माँ के सम्मुख प्रणाम करने के लिए झुका तो वह अद्वितीय दृश्य था।

सहज संगीतज्ञों ने मधुर गीत सुनाए। श्री मुस्तफा गुलाम अली खान, विश्व विख्यात शास्त्रीय संगीतज्ञ, ने अत्यन्त आनन्दपूर्वक देवी के भिन्न रूपों में श्रीमाताजी का स्तुति गायन किया। रोकने पर भी वो स्वयं को रोक ना पा रहे थे। बार-बार वो हम सब उपस्थित लोगों को गायन में अपना साथ देने के लिए उत्साहित कर रहे थे। यह अत्यन्त दिव्य शाम थी।

एक बहुत बड़ा केक लाया गया जिसे सर सी. पी. और श्री माताजी ने मिल कर काटा और बाद में सभी उपस्थित लोगों को प्रसाद के रूप में दिया गया।

अन्त में भारत के भिन्न राज्यों से आए सहज प्रतिनिधियों तथा कुछ विदेशी सहजयोगियों ने अपने देश तथा राज्यों के प्रतिनिधियों के रूप में मंच पर आकर श्री माताजी को पुष्प भेंट किए। श्री माताजी के वहाँ से जाने के पश्चात् एक हज़ार के लगभग वहाँ उपस्थित हम सब लोगों को, कॉलेज के बगीचे में, अत्यन्त स्वादिष्ट प्रसाद-भोजन करवाया गया।

सर सी.पी. श्रीवास्तव साहब का भाषण

कहा जाता है कि जोड़े स्वर्ग में बनाए जाते हैं, मेरे मामले में यह कथन बिल्कुल सत्य है। मैं ब्रह्माण्ड का सबसे भाग्यशाली व्यक्ति हूँ। आपकी श्रीमाताजी अद्वितीय पत्नी, माँ, दादी और अब

परदादी हैं। अत्यन्त स्वादिष्ट खाना खिलाकर और हर समय मेरी देखभाल करके बीते हुए इन 56 सालों में इन्होंने मुझे बिगाड़ दिया है। इन्हीं की उदारता के कारण मैं अपने दफ्तर में कठोर परिश्रम कर पाया, परन्तु घर आने पर मुझे सभी कुछ अत्यन्त आनन्दमय प्राप्त हुआ।

मेरे सभी सम्बन्धियों के प्रति वे अत्यन्त करुणामय हैं। आप हैरान होंगे कि जब भी सम्बन्धी हमारे घर पर आते तो वे उनकी इस प्रकार देखभाल करतीं जैसे अपनी बेटियों की देखभाल कर रही हों। कभी उन्होंने एक बच्चे और दूसरे बच्चे में भेदभाव नहीं किया।

जो परिवार उन्होंने दिया है-दोनों बेटियां अत्यन्त अद्‌भुत हैं-कल्पना यहां हमारे साथ हैं। पिछले 56 सालों में उन्होंने (श्रीमाताजी) मेरे लिए इतना कुछ किया है कि मैं उनका धन्यवादी हूँ। परन्तु इससे अधिक धन्यवाद मैं उन्हें उस के लिए देना चाहता हूँ जो उन्होंने विश्व के लिए किया है।

उन्होंने नई मानवता का सृजन किया। इन्होंने वो कार्य कर दिखाया जो कोई अन्य न कर सका। जिन लोगों के विषय में मैं जानता हूँ या जिनके विषय में मैंने पढ़ा है उनमें से कोई भी ऐसा कार्य न कर सका-हज़ारों की संख्या में देवदूतों (Angels) का सृजन करना, ऐसे लोगों का जो अच्छाई, पावित्र्य और विश्व-बंधुत्व की धारणा के सूत्र में बंधे हुए हैं।

आप जानते हैं आज के विश्व में सर्वत्र परस्पर विरोध है। किसी भी समाचार पत्र को आप पढ़ें, आपको लगता है कि चहुँ ओर समस्याएं ही समस्याएं हैं। परन्तु केवल एक विश्व ऐसा है-उनका विश्व-जो यहाँ बैठा हुआ है, सुन्दर है, पवित्र है, शुद्ध है और जो मानवता का भविष्य है।

अपने जन्मदिवस के अवसर पर उन्होंने सहजयोगी बनाने के लिए आपका आह्वान किया था। उन्होंने कहा कि आपमें से हर एक यदि एक सौ नए सहजयोगी बना दे तो यह विश्व एक बिल्कुल भिन्न विश्व बन जाएगा। मैं आपको बताना चाहता हूँ कि यह केवल बातें नहीं हैं। यह अत्यन्त आवश्यक है, इस विश्व में यह हमारी अत्यन्त गहन आवश्यकता है। हमारे सम्मुख केवल दो विकल्प हैं जो अत्यन्त स्पष्ट हैं या तो हम मानवता को बचाने के पथ पर चल पड़ें या इसे नष्ट करने के पथ पर। वे (श्रीमाताजी) विश्व की एक मात्र शक्ति हैं। इनके अतिरिक्त कोई अन्य शक्ति नहीं जिसे मैं जानता हूँ। ये उत्तर, दक्षिण, पूर्व, पश्चिम को समीप ला रही हैं, उनका समन्वय कर रही हैं।

अपने श्रोताओं को, कहीं अन्यत्र, जैसा मैंने कहा था जहाजरानी के ये निर्देश हैं, परन्तु ये निर्देश मानवता को विभाजित करने के लिए नहीं हैं। मानवता एक है। उन्होंने सभी मान्यताओं, सभी जातियों, सभी रंगों और सभी धर्मों के लोगों को एक किया है। किसी ऐसे व्यक्ति का नाम क्या आप बता सकते हैं जो आज यह कार्य कर रहा है! सभी, लोगों को विभाजित करने में लगे हुए हैं। सभी कहते हैं, "मेरा ईश्वर (God) सर्वोत्तम है।" क्या आप इसकी कल्पना कर सकते हैं? क्या परमात्मा भी दो हो सकते हैं? क्या दो सर्वशक्तिशाली परमात्मा हो सकते हैं? दो सर्वशक्तिशाली परमात्मा नहीं हो सकते और वे ही (श्रीमाताजी) उनका एक मात्र अवतरण हैं।

परमपूज्य माताजी श्री निर्मला देवी का प्रवचन

हृदय से मैं आप सबका धन्यवाद करना चाहती

हूँ कि इतने प्रेम पूर्वक आप यह वर्षगांठ मनाने के लिए यहाँ आए। धन्यवाद देने के अतिरिक्त मैं कुछ नहीं कर सकती। वास्तव में किस प्रकार से आप लोगों ने मेरे तुच्छ से कार्य की सराहना की है! यह तो केवल प्रेम का कार्य है। प्रेम मानव का महानतम गुण है। प्रेम यदि आपमें विकसित हो जाए तो बाकी सब भूल जाता है क्योंकि प्रेम का तो अपना ही पारितोषिक है और यही ईनाम यहां पर है। मैं इसे देख सकती हूँ।

मैं कुछ विशेष नहीं हूँ सिवाय इसके कि मैं सभी से प्रेम करती हूँ। मैं सोचती हूँ कि किसी की भी भर्त्सना न की जाए क्योंकि मैंने लोगों को सभी समस्याओं से, संकीर्ण विचारधाराओं से, उबरकर विशाल क्षेत्र में आते हुए देखा है जहां पर उनमें प्रेम प्रदान करने की योग्यता आ जाती है। मैं यह अवश्य कहूँगी कि मेरा जो विश्वास था उसने भली-भांति कार्य किया है। यह देखकर मुझे अत्यन्त हर्ष हो रहा है कि आपमें से इतने सारे लोगों ने प्रेम को समझा और परस्पर प्रेम फैलाया। हमारी मानवीय समस्या यह है कि हमें इस बात का ज्ञान नहीं है कि हम परस्पर किस प्रकार प्रेम करें। अगर हम यह बात समझ पाते तो यह 'प्रेम' की महत्ता हमारी समझ में आ जाती। वास्तव में हम प्रेम का आनन्द लेते हैं। आपको कुछ भी बलिदान नहीं करना पड़ता। कुछ भी देना नहीं पड़ता। सभी कुछ विद्यमान है और आप इसका आनन्द लें। यह पारस्परिक है। दूसरों को प्रेम देने में आपको आनन्द आता है। हो सकता है कि आपके कुछ अनुभव अच्छे न रहे हों। परन्तु अधिकतर मनुष्यों में परस्पर प्रेम करने का स्वभाव होता है। प्रेम परस्पर बांटा जाना चाहिए और इसका आनन्द लिया जाना चाहिए। मैंने इसका आनन्द लिया है और आप लोगों ने भी इसका आनन्द लिया है। इसीलिए मैंने कहा है कि ऐसा करना जारी रखें और अपने प्रेम को सर्वत्र फैला दें।

परमात्मा आपको आशीर्वादित करें।

हर क्षण मैं आपके साथ विद्यमान हूँ
श्रीमाताजी का संदेश

माताजी निर्मला देवी
प्रतिष्ठान
एन.डी.ए. रोड;
पोस्ट बाक्स नं. 2
पुणे-411023
दिनांक 2 अगस्त 2003

मेरे प्रिय बच्चो,

उत्तरी एवं दक्षिणी अमेरिका के सहजयोगियो, कान्ना जोहारी में आगामी कृष्ण पूजा के लिए आपका निमंत्रण पाकर मैं प्रसन्न हूँ।

आजकल मैं भारत में पुणे प्रतिष्ठान में हूँ तथा इस समय मैं यात्रा न कर पाऊंगी। परन्तु हर क्षण मैं आप सबके साथ विद्यमान हूँ। मैं जानती हूँ कि विश्व के सभी सहजयोगी श्रीकृष्ण प्रदत्त नैतिक, आध्यात्मिक एवं चारित्रिक मूल्यों का पूर्ण सम्मान करते हैं। इस समय पर आपने सहजयोग प्रचार के लिए अपने प्रयत्नों को तेज करने का पुनः दृढ़ निश्चय करना है।

प्रेम एवं आशीर्वाद के साथ
'माताजी निर्मला देवी'

श्री ईसामसीह पूजा

कैक्सटन हॉल, लन्दन (इंग्लैंड), 10-12-1979

(अंग्रेज़ी से अनुवादित)

आत्मसाक्षात्कार को बनाए रखने के मार्ग में आने वाली अन्तर्निहित कठिनाईयां

आज का दिन हमारे लिए यह स्मरण करने का है कि ईसामसीह ने पृथ्वी पर मानव के रूप में जन्म लिया। वे पृथ्वी पर अवतरित हुए और उनके सम्मुख मानव के अन्दर मानवीय चेतना प्रज्जवलित करने का कार्य था - मानव को यह समझाना कि वे यह शरीर नहीं हैं, वे आत्मा हैं। ईसामसीह का पुनर्जन्म ही उनका सन्देश था अर्थात् आप अपनी आत्मा हैं यह शरीर नहीं। अपने पुनर्जन्म द्वारा उन्होंने दर्शाया कि किस प्रकार वे आत्मा के साम्राज्य तक उन्नत हो पाए, अपनी वास्तविक स्थिति तक। क्योंकि वे 'प्रणव' थे, वे ब्रह्मा थे - वे ब्रह्मा थे, महाविष्णु थे, जैसे मैंने उनके जन्म के विषय में आपको बताया है। परन्तु वे पृथ्वी पर मानव रूप में अवतरित हुए।

एक अन्य चीज़ उन्होंने दर्शानी चाही कि आत्मा का धन तथा सत्ता से कोई लेना देना नहीं। यह सर्वशक्तिमान है तथा सर्वव्याप्त है। परन्तु उनका जन्म एक अस्तबल में हुआ, वे किसी राजा के यहां नहीं जन्मे, एक सर्वसाधारण व्यक्ति के यहां जन्मे-एक बढ़ई के यहां। क्योंकि आप यदि राजा हैं, जैसे हिन्दी भाषा में कहा गया है 'बादशाह' हैं तो आप से बड़ा कुछ भी नहीं है। क्या यह बात ठीक नहीं है? इसका अर्थ यह है कि आप से ऊंचा कुछ भी नहीं है। कोई भी चीज आपको अलंकृत नहीं कर सकती (आपके रुतबे को नहीं बढ़ा सकती), आप जो हैं, आप सर्वोच्च हैं। आप के लिए सारी सांसारिक चीज़ें सूखे घास सम हैं, तृणवत हैं।

ईसामसीह को घास पर सुलाया गया। कुछ लोगों के लिए यह बात अत्यन्त कष्टकर है और उन्हें खेद होता है कि जो अवतरण हमें बचाने के लिए आया उसे इन परिस्थितियों में रखा गया। क्यों नहीं, परमात्मा ने, उन्हें कुछ अच्छे हालात प्रदान किये? परन्तु ऐसे लोगों की इस बात से कोई फ़र्क नहीं पड़ता, कि चाहे वो सूखी घास पर लेटे रहें या अस्तबल में या किसी भी और स्थान पर, उनके लिए सभी कुछ समान है क्योंकि इन भौतिक चीज़ों का उन पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता। वो इतने निर्लिप्त होते हैं तथा पूर्णत: आनन्द में बने रहते हैं। वे अपने स्वामी होते हैं। कोई अन्य चीज़ उन पर स्वामित्व नहीं जमा सकती है। कोई पदार्थ उन पर हावी नहीं हो सकता। किसी भी प्रकार की सुख-सुविधा उन पर स्वामित्व नहीं जमा सकती। अपने अंदर ही वे पूर्ण सुख के स्वामी होते हैं। सभी सुख उन्होंने अपने अन्दर ही प्राप्त किये होते हैं। ऐसे लोग अत्यन्त सन्तुष्ट स्वभाव होते हैं और यही कारण है कि वे सम्राट हैं, उन्हें बादशाह कहा जाता है। वो बादशाह नहीं जो पदार्थों के पीछे दौड़ते रहते हैं या जीवन की सुख सुविधाएं खोजते रहते हैं।

कहने से मेरा अभिप्राय यह है कि आपके पास यदि सुख-सुविधाएं हैं तो ठीक है और यदि नहीं हैं तो भी ठीक है, कोई अन्तर नहीं पड़ता। जब मैं लैटिन अमेरिका गई तो बहुत से लोगों ने कहा कि 'हम यह नहीं समझ सकते कि ईसामसीह का जन्म गरीब व्यक्ति के रूप में क्यों हुआ।' एक बार फिर यह मानवीय धारणा है। मानव परमात्मा को चलाना चाहता है, 'सम्राट के महल में जन्म लेना'-आप

परमात्मा को इसकी आज्ञा नहीं दे सकते। परमात्मा के विषय में भी हमारी अपनी धारणाएं हैं। क्यों वह निर्धन व्यक्ति बने, क्यों वह असहाय हो? परन्तु ईसामसीह ने कभी भी नहीं दर्शाया कि वह असहाय हैं। वे आपके सभी राजा-महाराजाओं से तथा राजनीतिज्ञों से कहीं अधिक प्रगल्भ (dynamic) थे। उन्हें किसी का भय न था। जो भी कुछ उन्होंने कहना था वह उन्होंने कहा। उन्हें न तो क्रूसारोपित होने का भय था और न ही किसी अन्य तथाकथित दण्ड का। आप जानते हैं कि मानव में ही जीवन के इस प्रकार के विचार हैं और यह विचार वह परमात्मा पर भी लादना चाहता है और प्रयत्न करता है कि परमात्मा भी उसकी इन धारणाओं का अनुकरण करे। परमात्मा आपकी धारणा नहीं है। वो धारणा बिल्कुल भी नहीं है। आप लोग भी कहते हैं कि धारणा तो आखिरकार धारणा ही है, वास्तविकता नहीं। यह बात मैंने हाल ही में पता लगाई है। ये एक अन्य मिथक (myth) है जो लोगों के मस्तिष्क में समाई हुई है कि धारणा तो धारणा ही है। ठीक है, माताजी कहती हैं तो ठीक है। तो क्या! परन्तु यह भी एक धारणा है क्योंकि **धारणा एक विचार है और आपको विचार के स्तर से एक ऊंचे स्तर पर उठना है - निर्विचार चेतना के स्तर पर जहां आपमें कोई विचार नहीं होता, जहां आप विचार के मध्य में होते हैं अर्थात् जहां एक विचार उठता है और गिरता है और इसके बीच में कुछ स्थान होता है। फिर दूसरा विचार उठता है और गिरता है। आप इन दोनों विचारों के मध्य में होते हैं जिसे हम 'विलम्ब' कहते हैं - वह समय जब आप रुकते हैं।**

तब आप ईसामसीह को समझ पायेंगे। आंशिक रूप से हमें बचाने के लिए वो यहां थे। उनके बहुत से पक्ष हैं। मैं कहना चाहूँगी कि वो इस पृथ्वी पर केवल मानव को बचाने के लिए ही नहीं आए, उनके और भी बहुत से पक्ष थे। यह एक अन्य पक्ष है। मानव ने मांग की थी कि उसकी रक्षा होनी चाहिए। क्यों? क्यों उनकी, उन सभी की रक्षा होनी चाहिए? उन्होंने परमात्मा के लिए क्या किया है? किस प्रकार आप परमात्मा से मांग कर सकते हैं कि वह हमारी रक्षा करें? क्या आप ये मांग कर सकते हैं? क्या आप ऐसा कर सकते हैं? आप यह मांग नहीं कर सकते। जैसा आप देख रहे हैं वे विशुद्धि और सहस्रार के बीच का मार्ग बनाने के लिए अवतरित हुए - आदिपुरुष (primordial being) विराट के आज्ञा चक्र में। इसी द्वार (आज्ञा) को खोलने के लिए वे अवतरित हुए। विकास प्रणाली में हर एक अवतरण हमारे अन्दर का एक द्वार खोलने, एक मार्ग बनाने या हमारी चेतना को ज्योतिर्मय करने के लिए आया। अतः ईसामसीह विशेष रूप से हमारे अन्दर बने उस छोटे से द्वार को खोलने के लिए आए जिसे हमारे अहं और प्रतिअहं ने संकीर्ण कर दिया है। अहं और प्रतिअहं हमारी विचारप्रणाली के उपफल (byproduct) हैं। कुछ विचार भूतकाल से सम्बन्धित होते हैं और कुछ भविष्य के विचार होते हैं। वे इसी दूरी को समाप्त करने के लिए, इसे पाटने के लिए, अवतरित हुए और इसी लक्ष्य प्राप्ति के लिए उन्होंने, अपने शरीर का बलिदान दे दिया।

आपके लिए यह अत्यन्त खेद एवम् पछतावे की चीज़ हो सकती है परन्तु ऐसे अवतरणों के लिए इस प्रकार का कोई खेद या पछतावा नहीं होता। यह एक लीला है कि उन्होंने इस तरह की भूमिका निभानी है, इसलिए मेरी समझ में नहीं आता कि क्यों आप

लोग उन्हें इतना ढीला-ढाला, दुखी व्यक्ति के रूप में दर्शाना चाहते हैं! वो कभी दुखी नहीं थे। ऐसे लोग कभी भी इस प्रकार से दुखी नहीं हो सकते जैसे आप होते हैं। यह एक अन्य धारणा है कि ईसामसीह को ढीले-ढाले, सूखे हुए, भूख से पीड़ित हड्डियों का ढांचा-जिनकी एक एक हड्डी को गिना जा सकता हो - इस प्रकार का व्यक्ति होना चाहिए। मैं आपको बताती हूँ कि ऐसा सोचना भयानक है। अपने जन्म से लेकर मृत्यु तक वे सदैव आनन्दमय व्यक्ति थे। वे प्रसन्नता एवम् आनन्द की प्रतिमूर्ति थे जो आपके अन्त: स्थित आनन्द के स्रोत, हृदय में बसी आपकी आत्मा को ज्योतिर्मय करके आपको आनन्दमय बनाना चाहते थे, प्रसन्नता का प्रकाश आपको देना चाहते थे। विश्व में वो केवल आपको बचाने और प्रसन्नता को प्रदान करने ही के लिए नहीं आए, आपको आनन्द प्रदान करने के लिए भी वो अवतरित हुए क्योंकि अज्ञान, अंधकार में फंसे हुए अपनी मूर्खताओं से मनुष्य व्यर्थ में स्वयं को पीट रहा है और नष्ट कर रहा है। शराबखानों तथा कष्टों में फंसने के लिए किसी ने आपसे नहीं कहा, यह भी नहीं कहा कि घुड़दौड़ पर जाकर दिवालिए हो जाओ। कुगुरूओं के पास जाकर कष्टों में फंसने के लिए किसी ने आपसे नहीं कहा। परन्तु स्वेच्छा से आप अपना विनाश खोजते हैं। उषाकाल में खिले हुए फूल की तरह से आपको प्रसन्नता प्रदान करने के लिए वे अवतरित हुए। स्वयं को प्रसन्नता एवम् आनन्द देने के लिए आप किसी बालक को देखें। मैं तो, कम से कम स्वयम् को जानती हूँ, अटपटे लोगों के विषय में नहीं जानती। कहने से मेरा अभिप्राय यह है कि इन लोगों को फूल भी कांटों की तरह से लगते हैं, यह बात मेरी समझ में नहीं आती।

परमात्मा का यह बालक जो शिशु रूप में इस पृथ्वी पर अवतरित हुआ वह अत्यन्त आनन्ददायी है। इसलिए हम सबके लिए, पूरे ब्रह्माण्ड के लिए क्रिसमस महान आनन्द का त्यौहार होना चाहिए क्योंकि ईसामसीह हमारे लिए वो प्रकाश ले कर आए जिससे हम जान सकते हैं कि कोई ऐसा अस्तित्व भी है जिसे हम परमात्मा कहते हैं; कोई तो ऐसा है जो इस अंधकार को दूर करेगा। यह पहली शुरुआत थी। **अत: हम सब के लिए आवश्यक है कि हम आनन्दित, प्रसन्न और शान्त हों तथा किसी भी घटना को उतनी गम्भीरता से न लें जितनी गम्भीरता से उसे हम लेते हैं।** दिव्य जीवन आपको गम्भीर नहीं बनाता क्योंकि यह सब तो मात्र लीला है, यह माया है। जो कर्मकांड लोग करते हैं, सभी तथाकथित धार्मिक लोगों में मैंने देखा है कि धर्म के नाम पर वे बहुत गम्भीर हैं। धार्मिक व्यक्ति से तो हँसी फूट पड़ती है। उसकी समझ में नहीं आता कि किस प्रकार से वो अपने आनन्द को छिपाए तथा व्यर्थ में गम्भीर लोगों को देखने पर किस प्रकार अपनी हंसी को नियन्त्रित करे। कहने से अभिप्राय यह है कि कोई मर नहीं गया है। जिस प्रकार से लोग बातें करते हैं उससे कई बार तो यह समझ नहीं आता कि अपने साथ वो क्या करें। ईसामसीह जैसे व्यक्ति को उदास करने के लिए संसार में कुछ भी नहीं है। आप यदि वास्तव में उन पर विश्वास करते हैं तो सर्वप्रथम कृपया यह मूर्खता भरी उदासी, खीज, मुंह लटका कर बैठना, चिड़चिड़ापन, किसी से बात न करना तथा मौन, नीरसता को त्याग दें। ईसामसीह को समझने का यह तरीका ठीक नहीं है। आप देखें कि

किस प्रकार जा कर उन्होंने जनता से बातचीत की! किस प्रकार चहुँ ओर के लोगों के सम्मुख उन्होंने अपने हृदय को खोला और किस प्रकार उन्हें प्रसन्नता प्रदान करने का प्रयत्न किया! उन्होंने कहा कि आपको पुनर्जन्म लेना होगा, अर्थात् उन्होंने यह कार्य करना था तथा किसी न किसी समय आपने इसे प्राप्त करना है। उन्होंने वचन दिया है कि आपको वास्तव में पुनर्जन्म लेना होगा अर्थात् उन्होंने यह कार्य करना था तथा किसी न किसी समय आपने इसे प्राप्त करना है। उन्होंने वचन दिया है कि आपको वास्तव में पुनर्जन्म लेना होगा। **ईसामसीह को हमारे अन्दर जन्म लेना है।** मैं नहीं जानती इस बात से ईसाई लोग क्या समझते हैं। किस प्रकार आप द्विज (Born again) बनते हैं? बपतिज्म (Baptism) के कर्मकांड द्वारा नहीं। धर्मविद्यालय से आकर कोई व्यक्ति आपको ईसाई नहीं बना सकता। जैसे हमारे यहाँ भारत में कुछ वैतनिक ब्राह्मण हैं, जैसे आपके यहां भी कुछ वैतनिक लोग हैं जो सारा दिन शराब पीते हैं और खाते रहते हैं और स्वयं को परमात्मा द्वारा अधिकृत व्यक्ति बताते हैं। परमात्मा से अधिकार प्राप्त किये बिना, अधिकारी बने बिना आप आनन्द प्रदान नहीं कर सकते। यही कारण है कि मैंने इन सब लोगों को देखा है। इन तथाकथित पंडितों और पादरियों को, जो परमात्मा द्वारा अधिकृत न होने के कारण अत्यन्त गम्भीर हैं, ईसामसीह के जन्मदिवस पर भी गांव से आया कोई व्यक्ति यदि देखे तो उसे लगेगा जैसे शवयात्रा हो। समारोह समाप्ति के पश्चात जब आप घर जाते हैं तो किस प्रकार से आप उत्सव मनाते हैं। मैं नहीं जानती क्यों? परन्तु लोग शैम्पेन (Champagne) पीते हैं। ईसामसीह का अपमान करके किस प्रकार आप उनका जन्मदिवस समारोह मना सकते हैं! वे आपकी चेतना को ज्योतिर्मय करने के लिए अवतरित हुए क्योंकि जिस बिन्दु तक आपकी चेतना पहुँच चुकी है इसका वे सम्मान करते थे। परन्तु आप इसे (चेतना) नीचे लाने का प्रयत्न कर रहे हैं। उन्हें समझने का क्या यही तरीका है?

उन्होंने वचन दिया है कि आपका बपतिज्म (Baptism) होगा, आपको पुनर्जन्म लेना होगा और अब सहजयोग में यह वचन पूर्ण किया जा रहा है। अतः आप आनन्दित हों कि आपके आज्ञा चक्र पर पुनः ईसामसीह ने आपके ही अन्दर जन्म लिया है। वे वहां पर विराजमान हैं और आप जानते हैं किस प्रकार उनसे सहायता मांगनी है। यही मुख्य चीज है जो व्यक्ति ने समझनी है, कि वह समय आ गया है, धर्मग्रंथों में जिसका वचन दिया गया है, वह प्राप्त करने का समय आ गया है-केवल बाईबल में ही नहीं परन्तु विश्वभर के सभी धर्मग्रन्थों में। आज समय आ गया है जब आपने केवल कुण्डलिनी जागृति द्वारा ईसाई, ब्राह्मण एवम् पीर बनना है। इसके बिना कोई अन्य मार्ग नहीं।

आपके अन्तिम निर्णय का समय अभी है। केवल कुण्डलिनी जागृति के माध्यम से परमात्मा आपका आंकलन करेंगे अन्यथा वो किस प्रकार आपको आंक सकते हैं। आप किसी व्यक्ति के बारे में सोचते हैं, कोई व्यक्ति अन्दर आता है और अन्दर उसका निर्णय करने के लिए कोई बैठा हुआ है। कैसे? यह देखकर कि आप कितने हज्जामों के पास गए या आप कितने उपहार लाए या आपने कितने मंगलकामना कार्ड भेजे। कितने लोगों को आपने ऐसी चीजें भेजी जो आपको नहीं भाती थीं। यह तरीका नहीं है। या ये कि कितने मूल्य पर आपने

ये चीजें खरीदीं, जिस प्रकार हम करते हैं। कौन से तरीके से परमात्मा हमारा आंकलन करेंगे? लोग कहते हैं कि सतही रूप से यह आंकलन नहीं होता। तो हमने कितनी गहनता प्राप्त की है? आईए देखें कि इस गहनता में हम कहां तक जा सकते हैं। ज्यादा से ज्यादा हम उस बिन्दु तक पहुँचते हैं जहां पर एक बार फिर धारणा बन जाते हैं। अत: जो भी गहनता हमें प्राप्त हुई है वो केवल तार्किकता (rationality) तक ही पहुँचती है, धारणा के बिन्दु तक, उससे आगे हम नहीं पहुँच सकते। तो किस प्रकार हमारा आंकलन किया जाए? लोग जब चिकित्सक के पास जाते हैं तो वह किस प्रकार उनका रोग निदान करता है? उसके पास यन्त्र होते हैं और वह इस कार्य को करता है। अन्दर प्रकाश डाल कर स्वयं देखता है और फिर कहता है कि स्थिति यह है। अब आपकी आध्यात्मिकता किस प्रकार जांची जाएगी? बीज को किस प्रकार जांचा जाता है? इसके अंकुरण द्वारा। बीज का जब आप अंकुरण करते हैं और इसकी अंकुरण शक्ति को देखते हैं तब आप जान जाते हैं कि बीज अच्छा है या बुरा। इसी प्रकार जिस तरह से आपका अंकुरण होता है, जिस प्रकार से आपको आत्मसाक्षात्कार प्राप्त होता है, जिस प्रकार आप इसे बनाए रखते हैं और इसका सम्मान करते हैं उसी से आपको जांचा जाता है। आपको जांचने का यही तरीका है। किस प्रकार के कपड़े आप पहनते हैं, कपड़ों का रंग मिलान आप किस प्रकार करते हैं या आप कौन से हज्जामों के पास जाते हैं, इससे नहीं। आप कौन से पदों पर आरूढ़ हैं, कितने बड़े राजनीतिज्ञ या अफसरशाह बन गए हैं, किस प्रकार के घर आपने बनवाए हैं या किस प्रकार के नोबल पुरस्कार आपने जीते हैं इससे भी आपका आंकलन नहीं किया जाता। लोकहित में आपने कौन से कार्य किए हैं या कितना धन आपने दान दिया है इससे भी नहीं। आपने यदि बहुत अधिक धन दान दिया है तो किसी न किसी प्रकार से आपके अहं का कद बढ़ जाएगा और यह आपको आपके स्तर से नीचे ले जाएगा, समुद्री जहाज से भी ज्यादा नीचे। व्यक्तित्व आंकलन का यह बिल्कुल भिन्न तरीका है। हम देख सकते हैं कि मनुष्यों ने किस प्रकार ईसामसीह का आंकलन किया और परमात्मा ने किस प्रकार। वे आए और सूखी घास पर उन्हें रखा गया मानो वे किसी पंख की तरह हों। उनकी इस तकलीफ को उनकी माँ ने भी कभी महसूस नहीं किया। इसी प्रकार से जिन लोगों ने अपने आचरण से कभी अन्य लोगों को नहीं सताया या कभी किसी पर क्रोधित नहीं हुए, इस आंकलन में उन्हें प्रथम दर्जा दिया जाएगा।

कुण्डलिनी जागृति के मार्ग में भी कुछ अंतर्निहित दोष हैं। आपके पूर्व कर्मों के कारण कुण्डलिनी के अन्दर निहित कुछ दोष हैं। इस जीवन में आप कौन से कर्म करते रहे, जो चीज़ें केवल धारणा मात्र थीं उन्हें आपने वास्तविकता मान लिया क्योंकि आपको पूर्ण (Absolute) का ज्ञान न था। ऐसी स्थिति में जो भी कुछ आप करते रहे उसका उद्भव अन्धकार से हुआ। अन्धकार में जो कार्य आपने किया उसमें अन्धकार का अंश होना ही है। आत्मसाक्षात्कार प्राप्त किये बिना यदि आपने घोषणा की है कि आप महान सन्त हैं, ये हैं, वो हैं, तो आपके लिए कोई अवसर नहीं है। यदि आप यह सोचते हैं कि आप दिव्य व्यक्तित्व हैं या आत्मसाक्षात्कारी हैं तो आपको कोई अवसर नहीं। सभी पुजारियों (सभी धर्मों के)

को सबसे अन्त में आत्मसाक्षात्कार मिलेगा। रामायण में बालिमकी ने एक बहुत ही रोचक कहानी कही है। एक कुत्ते से पूछा गया कि अपने अगले जन्म में वह क्या बनना चाहेगा? कुत्ते ने उत्तर दिया मुझे कुछ भी बना देना परन्तु मठाधीश नहीं बनाना, पुजारी नहीं बनाना। चाहे जो कुछ बना देना परन्तु कहीं पुजारी नहीं बना देना। कुत्ते के अन्दर उस विवेक की कल्पना कीजिए! मैं यह भी नहीं कह रही हूँ कि सभी पुजारी ऐसे ही होते हैं। हो सकता है कि कुछ लोग सच्चे भी हों, कुछ पुजारी वास्तव में आत्मसाक्षात्कारी हो सकते हैं-परमात्मा द्वारा अधिकृत। परन्तु मुझे विश्वास है कि आम जनता उन्हें स्वीकार नहीं करती। इस बात का मुझे विश्वास है। मैंने आपका इतिहास देखा है और पाया है कि उन्हें ऐसे सभी लोगों द्वारा दुत्कारा गया तथा सताया गया। परन्तु अब उचित-अनुचित को जाँचने का समय आ गया है। अब आप किसी को सूली पर नहीं चढ़ा सकते। आप ऐसा नहीं कर सकते। हर व्यक्ति का आंकलन कुण्डलिनी की जागृति के माध्यम से होगा।

अब आपको जान लेना चाहिए कि मानव की तीन श्रेणियां हैं। मेरी समझ में नहीं आ रहा कि मैं किस प्रकार से यह बात शुरु करूं ताकि आपको सदमा न पहुंचे। एक तो हमारे जैसे मनुष्य हैं। इसे **'नर योनि'** कहा जाता है।

दूसरी श्रेणी **'देव योनि'** है - वो लोग जो जन्मजात साधक हैं या आत्मसाक्षात्कारी हैं।

और तीसरी श्रेणी के लोग 'राक्षस' हैं। इन्हें गण भी कहा जाता है। परन्तु हम कह सकते हैं कि मनुष्यों का एक वर्ग राक्षस है, ऐसे लोग जो असुर हैं। **अतः संसार में असुर लोग भी हैं, श्रेष्ठ लोग भी हैं और इन दोनों के मध्य के लोग भी हैं।** श्रेष्ठ लोग बहुत कम हैं। ऐसे लोग जन्म से आत्मसाक्षात्कारी होते हैं। मेरे सम्मुख उनकी समस्या अधिक नहीं है। परन्तु हमें उन लोगों को सम्भालना है जो मध्य में हैं। वो अच्छाई की ओर बढ़ना चाहते हैं परन्तु कोई बाधा उन्हें पकड़े हुए है। ऐसे लोगों की कुण्डलिनी में अन्तर्निहित कुछ दोष होते हैं। जिन्हें समझ लेना हमारे लिए आवश्यक है।

सर्वप्रथम अस्वस्थ शरीर-शारीरिक रूप से अस्वस्थ होना है। विशेष रूप से इस देश (इंग्लैंड) में लोग जुकाम आदि कष्टों से पीड़ित हैं। इसका कारण वहाँ के जल में चूना (Calcium) का बाहुल्य है। इसी प्रकार से देश विशेष-स्थान विशेष के अनुसार यह समस्याएं हैं। जैसे हमारे देश में हमारी कुछ अन्य समस्याएं हैं, आपके देशों में कुछ अन्य समस्याएं हैं। जिस देश में व्यक्ति का जन्म होता है उसके अनुरूप शारीरिक समस्याएं होती हैं। आप में से अधिकतर लोगों ने किसी देश विशेष में जन्म लेने का निर्णय किया है। इसी कारण से आप लोग उस देश से इस प्रकार से जुड़े हुए हैं कि आपको उसमें कोई दोष ही नजर नहीं आता। हर देश में कुछ विशेषता है जिसके कारण व्यक्ति को स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्याएं आती हैं। अतः सहजयोगी होने के नाते व्यक्ति को समझना चाहिए कि स्वास्थ्य अत्यन्त महत्वपूर्ण है। यह शरीर परमात्मा का मन्दिर है। अतः आपको अपने स्वास्थ्य की देखभाल करनी होगी। आप यह भी जानते हैं कि **जब कुण्डलिनी उठती है तो पहली घटित होने वाली घटना आपके स्वास्थ्य का ठीक हो जाना है। क्योंकि** आपका पराअनुकम्पी (**Parasympathetic**) तंत्र कार्यान्वित हो जाता है। पराअनुकम्पी, व्यक्ति

को ज्योति प्रदान करता है जिसका प्रवाह अनुकम्पी तंत्र (Sympathetic) में होता है तथा व्यक्ति का स्वास्थ्य अच्छा हो जाता है। इसके विषय में आज मैं बहुत विस्तार से नहीं बताऊंगी क्योंकि समय का अभाव है। परन्तु यदि आप किसी पुस्तक को पढ़ेंगे-मैंने बहुत अधिक पुस्तकें नहीं लिखी हैं-परन्तु यदि आप मेरे प्रवचनों को सुनेंगे और जो लिखे हुए हैं उन्हें पढ़ेंगे तो आप जान जाएंगे कि किस प्रकार कुण्डलिनी अधिकतर रोगों को ठीक करने में सहायक होती है-सिवाय उन रोगों के जिन्हें मानवीय तत्व बढ़ावा देते हैं-जैसे किडनी रोग। गुर्दा रोग के एक रोगी का इलाज भी सहजयोग द्वारा हो चुका है। नि:सन्देह हम गुर्दा रोग का इलाज कर सकते हैं परन्तु व्यक्ति यदि एक बार मशीन (डायलिसिस) पर चला जाए तो कोशिश करने के बाद भी उसे रोग मुक्त नहीं किया जा सकता। उसका जीवन बढ़ाया जा सकता है परन्तु पूरी तरह से रोगमुक्त नहीं किया जा सकता है।

परन्तु रोग दूर करना किसी भी प्रकार से आपका कार्य नहीं है, यह बात आपको याद रखनी है। कोई भी सहजयोगी लोगों के रोग ठीक करने में न लग जाए। रोगी मेरे फोटो का उपयोग कर सकते हैं। परन्तु आपको रोग दूर करने के कार्य में नहीं लग जाना है क्योंकि इसका अर्थ यह है कि आप स्वयं को बहुत बड़ा परोपकारी मान बैठे हैं। मैंने देखा है कि जो भी सहजयोगी रोग दूर करने के कार्य में लग गए उनके लिए यह कार्य पागलपन बन गया और वो लोग भूल गए कि उन्हें भी कोई पकड़ हो गई है तथा कुछ कष्ट हो गया है। परन्तु वह स्वयं को ठीक नहीं करते और अन्ततः, मैं देखती हूँ, कि वो सहज से बाहर चले जाते हैं। **परन्तु मेरे फोटो से आप लोगों को ठीक कर सकते हैं। यह न समझें कि आप कोई महान चिकित्सक हैं और लोगों को ठीक करना आपका कर्त्तव्य है। नहीं, आप ऐसे नहीं हैं। आप आध्यात्मिकता हितैषी हैं जिसके उपफल स्वरूप साधक के शरीर में भी सुधार होता है।** क्योंकि यदि इस शरीर में ईसामसीह को जागृत होना है, परमात्मा ने इस शरीर में आना है तो शरीर को शुद्ध होना ही चाहिए। यह कार्य कुण्डलिनी करती है। परन्तु अस्पतालों की तरह से यह कोई अलग कार्य नहीं है। मैं ऐसे लोगों को जानती हूँ जो रोग मुक्त करने की शक्ति के कारण पगला गए और नियमपूर्वक अस्पतालों में जाने लगे तथा अस्पतालों में ही उनका अन्त हो गया। उन्होंने कार्यक्रमों में भी आना छोड़ दिया। वो मुझे मिलने भी ना आते।

व्याधि

तो यह परमात्मा की सबसे बड़ी बाधा है। यह शारीरिक रोगों की व्याधि है। शारीरिक रोग के कारण भी आपको इतना नीचे नहीं गिर जाना चाहिए। आपको यदि कोई समस्या भी है तो उसे भूल जाएं, शनैःशनैः आप ठीक हो जाएंगे। कुछ लोगों को ठीक होने में समय लगता है। **मुख्य बात तो अपनी आत्मा को प्राप्त करना है। अतः हमेशा यही न कहते रहें, "श्रीमाताजी, मुझे ठीक कर दीजिए, मुझे ठीक कर दीजिए, मुझे ठीक कर दीजिए।" आप मात्र इतना कहें, "श्रीमाताजी, मुझे आध्यात्मिक जीवन में बनाए रखिए।" आप स्वतः ही ठीक हो जाएंगे।** हो सकता है कुछ लोगों को ठीक होने में समय लगे। परन्तु आप तो जीवन भर बीमार रहे, तो ठीक होने में भी यदि कुछ समय लग

जाए तो कोई बात नहीं। भिन्न रोगों को ठीक करने की विधियाँ जो हमने बताई हैं उनके अनुसार कार्य करें। इस देश (लंदन) में विशेष रूप से जिगर तथा जोड़ों की समस्या है। इन सभी चीजों का हमारे पास इलाज है जिसे अपने शरीर के प्रति कर्त्तव्य मान कर, इस मन्दिर के प्रति कर्त्तव्य मान कर हमें कार्यान्वित करना होगा। आपके जीवन का यही अन्तिम लक्ष्य नहीं होना चाहिए। घर की सफाई की तरह से यह तो एक छोटा सा कार्य है जिसे करके भूल जाना चाहिए। आप मुझसे पूछ सकते हैं कि सफाई क्यों करनी है? जब मैं ऑक्सटेड में थी तो मैंने देखा और हैरान हुई कि सभी लोग हर चीज को चमकाते थे, बगिया को भी बहुत अच्छी तरह से रखा जाता था। हर चीज को चमका कर रखा जाता था फिर भी उनके घर में चूहा तक नहीं घुसता था। महीनों तक उनके घर में आते या घर से बाहर निकलते मुझे कोई दिखाई नहीं देता था। दोनों पति-पत्नि सफाई के विषय में बहुत ही सावधान थे। मैं नहीं जानती कि सफाई-स्वच्छता आदि के विषय में इतनी सावधानी किस लिए? यहाँ तक कि पति-पत्नि एक दूसरे से भी बात नहीं करते थे, यह सब मैंने देखा। हमारे घर के अतिरिक्त वहाँ सात और घर थे। सभी लोग हैरान थे कि हमारे घर पर इतने लोग कैसे आते हैं। उन्होंने पूछा कि - क्या आपका घर सबके लिए खुला है?' मैंने कहा,"हाँ, यह घर सबके लिए खुला है।" उनकी समझ में नहीं आया कि हमें क्या समस्या है। कोई भी चमकाई हुई और स्वच्छ चीजों को नहीं देखेगा। इस प्रकार हम भी उस सीमा तक नहीं जाते जहाँ पर यह वास्तविक सहजयोग बन जाए जो कि परमात्मा के लिए महत्वपूर्णतम है।

स्वास्थ्य महत्वपूर्ण है, परन्तु आपका चित्त आत्मा पर होना चाहिए। चित्त आपकी आत्मा पर होना चाहिए क्योंकि चित्त ही भिन्न दिशाओं में दौड़ता है और उलझ जाता है। आप इसे कार्यान्वित होने दें और यह कार्यान्वित हो जाएगा।

अकर्मन्यता

दूसरी बाधा जो मैं महसूस करती हूँ उसे अकर्मन्यता कहा जाता है अर्थात् व्यक्ति के अन्दर कार्यान्वित करने की इच्छा का अभाव होना। निःसन्देह जो लोग बेकार हैं और जो आत्मसाक्षात्कार नहीं पाना चाहते उन्हें भूल जाएं। आत्मसाक्षात्कार प्राप्त करने के पश्चात भी लोगों के अन्दर एक समस्या है कि वो इसे कार्यान्वित नहीं करना चाहते। सहज रूप से यदि कहा जाए तो वे आलसी हैं। हैरानी की बात है कि इस देश में आलस्य बहुत अधिक है। उस दिन मैंने एक फिल्म देखी जिसमें दर्शाया गया था कि आपके यहां से लोग जर्मनी गए और वहाँ के एक चालकविहीन वायुयान बनाने वाले कारखाने को उड़ा दिया। उन लोगों ने कुछ बहुत ही ज्यादा कर दिया ताकि हमारे बच्चे भविष्य में अच्छी तरह से रह सकें। परन्तु सहजयोग में हमें बहुत ही सावधान रहना होगा। लोग जब सहजयोग में आते हैं तो क्या होता है? उन्हें आत्मसाक्षात्कार मिल जाता है, शीतल चैतन्य लहरियाँ प्राप्त हो जाती हैं जो बाद में समाप्त हो जाती हैं। इसका कारण यह है कि वो इसे कार्यान्वित ही नहीं करना चाहते। अकर्मन्यता एक अन्य खतरा है। चैतन्य लहरियाँ जब चली जाती हैं तो एक साल के बाद वो वापिस आते हैं और कहते हैं,"श्रीमाताजी, हमें इस पर विश्वास नहीं है, परन्तु

मेरे पेट में कुछ दर्द है, क्या आप इसे ठीक कर देंगी?" सहजयोग की सभी शक्तियों से लैस होने के स्थान पर आप बेकार व्यक्ति बन जाते हैं और यहां आ कर मेरा समय बर्बाद करते हैं। यह सभी शक्तियां आपके अन्दर विद्यमान हैं। यह आपकी सम्पत्ति है। यह आपकी आत्मा की सम्पत्ति है जो आपके अन्दर आपकी देखभाल कर रही है। निश्चित रूप से यह अपनी अभिव्यक्ति करेगी। परन्तु जिन बाधाओं को आप स्वीकार कर लेते हैं उनके कारण यह अपनी अभिव्यक्ति नहीं कर पाती। हम कह सकते हैं कि यह अकर्मन्यता है जो इसे कार्यान्वित नहीं होने देती। बिना यह जाने, बिना यह समझे कि सहजयोग क्या है, किस प्रकार इसका उपयोग करना है, चैतन्य लहरियाँ क्या हैं और किस प्रकार यह कार्यान्वित होती हैं, लोग कहते हैं,"ओह! यह बहुत बड़ी बात है", क्योंकि वो वास्तविकता का सामना नहीं करना चाहते। ज्योंही कुण्डलिनी उठती है, ज्योंही प्रकाश अन्दर आता है, आंखें बंद होने से पूर्व ही आप देखते हैं कि अचानक प्रकाश अन्दर आ जाता है और तब आप आंखें खोलना ही नहीं चाहते क्योंकि आपके लिए यह बहुत ही बड़ी बात होती है क्योंकि अब तक आप सोए हुए थे। यदि आप थोड़ी सी आंखें खोल भी लें तो भी, हे परमात्मा! आप प्रकाश का सामना नहीं करना चाहते क्योंकि आप तो उस अवस्था से एकरूप हैं, आप अपनी आंखें खोलना ही नहीं चाहते। कुण्डलिनी आपकी आँखें खोलना चाहती है इसमें कोई सन्देह नहीं परन्तु आप पुन: अपनी आँखें बन्द कर लेते हैं। तो अकर्मन्यता के सम्मुख झुक जाने के लिए आप स्वतन्त्र हैं। अब यह सामूहिक भी हो सकती है। मैं आपको इतना बता सकती हूँ कि यह बहुत बड़ी बीमारी है जो फैलती है। मान लो, पति-पत्नी हैं और पत्नी इसी प्रकार (अकर्मन्य) है। अपनी पत्नी को उठाने के स्थान पर पति, विशेष रूप से पश्चिमी देशों में, पत्नी के सम्मुख घुटने टेक देता है। भारत में इसका बिल्कुल उलट है। क्योंकि वहाँ पर पति बहुत ही ज्यादा रौबीले हैं तो वहाँ पत्नियाँ पतियों के सम्मुख झुक जाती हैं। होता क्या है कि जिन दो लोगों ने प्राप्त किया हुआ है वो भी उसे खो देते हैं। यदि उनमें से एक जो साक्षात्कार की दृढ़ अवस्था में होता यदि वह अपनी इच्छाशक्ति का उपयोग करता कि 'नहीं, मैं इसे देखूंगा, देखने के लिए मेरे पास दृष्टि है, मुझे देखने दीजिए, मुझे स्वयं को एक अवसर देने दीजिए' तो दोनों बहुत अच्छे आत्मसाक्षात्कारी होते। वे यदि इसे स्वीकार करते तो यह कार्यान्वित होता और वह दूसरी सीढ़ी तक पहुँच जाते। हर चीज़ तीव्र गति से उड़ने वाले वायुयान की तरह से नहीं हो सकती कि यहाँ आप यान में बैठें और अगले क्षण चाँद पर पहुँच जाएं। आप यदि चाँद पर भी हैं तब भी आपके अन्दर तीसरी प्रकार का खतरा शुरु हो सकता है।

संशय

यह संशय कहलाता है अर्थात् सन्देह करना। मेरी समझ में नहीं आता कि सन्देह रूपी पागलपन का वर्णन किस प्रकार किया जाए! उदाहरण के लिए, यहाँ पर आए हुए आप लोगों का न जाने कितना प्रतिशत अगले दिन इस वक्तव्य के साथ नहीं आया कि,"अभी मुझे सन्देह है।" क्या यह विवेक का चिन्ह है? आप किस चीज़ पर सन्देह कर रहे हैं। अब तक आपने क्या प्राप्त कर लिया है? यह सन्देह कहां से आता है? यह आपके 'श्रीमान

अहम्' कि देन है जिसके विषय में मैंने एक भाषण के बाद दूसरा भाषण दिया है। यही 'श्रीमान अहम्' इस पर सन्देह कर रहे हैं क्योंकि वो नहीं चाहते कि आप पूर्ण (Absolute) को पा लें। अपने अहम् के साथ आप एकरूप हैं और आप भी इसे खोजना नहीं चाहते क्योंकि हर समय यही 'श्रीमान अहम्' आपके जीवन का पथ-प्रदर्शन करते रहे हैं। अब आप शक करना चाहते हैं।- किस पर शक? आप का सन्देह क्या है? आपको शीतल चैतन्य लहरियाँ महसूस होती हैं तो ठीक है, बैठ जाइए। यह तो वैसे होगा जैसे विश्वविद्यालय में प्रवेश लेकर कोई व्यक्ति वहाँ बैठ जाए और अध्यापक कहे,"यह चित्र (Diagram) है, यह मैं आपको देता हूँ" और वह विद्यार्थी उठ कर कहे कि, "हमें इस पर सन्देह है।" तो बिचारा अध्यापक क्या कहे? परन्तु वहाँ पर विद्यार्थी ऐसा नहीं करते क्योंकि उन्होंने फीस दी हुई होती है, उसके लिए धन खर्चा होता है। चाहे यह भयानक नाटक हो, उबाऊ हो, फिर भी हम इसे सीखते हैं क्योंकि हमने इसके लिए पैसा खर्चा है। हम इसे सीखते हैं 'आखिरकार हमने इस पर पैसा खर्चा है, क्या किया जाए?' परन्तु सहजयोग के लिए आप पैसा भी नहीं दे सकते। मैंने लोगों को सभी प्रकार की मूर्खता करते हुए देखा है। लोग कई-कई गुरुओं को स्वीकार करते हैं। कोई गुरु कहता है,"मैं तुम्हें उड़ना सिखाऊंगा।" इस बात के लिए वो पूरी तरह से तैयार होते हैं। इसके लिए वो धन देते हैं और ज़रा भी सन्देह नहीं करते कि ऐसी घोषणा करने वाला व्यक्ति क्या स्वयं भी कभी उड़ा है? क्या आपने कहीं उसे उड़ते हुए देखा है? कृपा करके उसे उड़ने के लिए कहें तो सही। वे कुण्डलिनी को उठते हुए देखेंगे, अपनी आँखों से वे कुण्डलिनी को उठते हुए, धड़कते हुए और सहस्रार तोड़ते हुए देखेंगे। फिर भी वो बैठ जाएंगे और कहेंगे कि,"मुझे सन्देह है।" अब आप हैं कौन? आप कहाँ तक पहुँचे हैं? क्यों आप सन्देह कर रहे हैं? किस चीज़ पर आप सन्देह कर रहे हैं? अपने विषय में आपने क्या जाना है। इस बिन्दु पर आकर आप विनम्र हो जाएँ। अपने हृदय में विनम्र हो कर कहें,"मैंने स्वयं को नहीं जाना है, मुझे स्वयं का ज्ञान प्राप्त करना है, अभी तक मुझे स्वयं का ज्ञान प्राप्त नहीं हुआ है, मुझे पूर्ण (Absolute) प्राप्त नहीं हुआ है, कौन से उपकरण (शरीर तन्त्र) से मैं सन्देह कर रहा हूँ?" कुण्डलिनी जागृति में यही सबसे बड़ी बाधा है कि जागृति के बाद भी 'संशय' बना रहता है।

प्रमाद

चौथी बाधा को हम प्रमाद कह सकते हैं। इसके कारण हम हर समय लड़खड़ाते रहते हैं। हर समय बेवकूफी भरे प्रश्न करते हैं। कहने से अभिप्राय यह है कि मान लो आप सड़क पर चल रहे हैं और आपको यूरोपियन तरीके से गाड़ी चलाने की आदत है तो सदैव आप गलत दिशा में ही गाड़ी मोड़ेंगे। परन्तु लन्दन में तो आपको पकड़ लिया जाएगा। इसी प्रकार से आप अभी तक यूरोपियन शैली में गाड़ी चला रहे थे, अब आप लन्दन में हैं, तो बेहतरी इसी बात में है कि लन्दन के लोगों की शैली को अपना लें और वहां के आवश्यक नियमों का पालन करें। परन्तु आप इसमें सन्देह कर रहे हैं। यह मुख्य बात है। फिर आप इसके अनुरूप नहीं चलना चाहते। तो प्रमादरूपी दुर्गुण का उदय इसलिए होता है क्योंकि यहां पर आने वाले सभी लोगों के लिए कुण्डलिनी की जागृति निःशुल्क है, सभी

लोगों के लिए, चाहे, नरक में रहे हों या स्वर्ग में, या चाहे उन्होंने दुनिया के सभी दुष्कर्म किए हों। परन्तु हम सहज-योग को दोष देते हैं अपने अन्दर स्वत: घटित होने वाली इस घटना को हम दोष देते हैं, कभी स्वयं को दोष नहीं देते कि, नहीं मैंने ही यह गलती की होगी। ठीक है, कोई बात नहीं। मैं यदि गलती करता हूँ तो इन्हें ठीक भी करूंगा, ठीक है। नि:सन्देह श्रीमाताजी क्षमा करती है, परन्तु कई बार मेरी क्षमा भी बेकार होती है, क्योंकि जब तक आप अपने अन्दर यह महसूस नहीं करते कि मैंने यह गलती की तब तक आप इस मार्ग पर जाने के स्थान पर दूसरे मार्ग पर जाने लगते हैं। आप उस मार्ग पर चले गए हैं तो सड़क पर चलने का नियम समझना होगा। अत: प्रमाद रूपी बाधा होने के पश्चात् हमारे अन्दर एक अन्य अंतर्निहित समस्या खड़ी हो जाती है। जिसे कहते हैं:

भ्रमदर्शन, अर्थात दृष्टि भ्रम। हमें भ्रमदर्शन होने लगता है, विशेष रूप से उन लोगों को जो LSD तथा अन्य इस प्रकार के नशे लेते हैं। वो मुझे नहीं देखते। कभी-कभी तो उन्हें केवल प्रकाश दिखाई देता है या इसी प्रकार का भूत या भविष्य, या कोई और भ्रम। वे इसी प्रकार कोई अन्य भ्रम देख सकते हैं। आप यदि मुझे स्वप्न में देखते हैं तो ठीक है या स्वप्न में यदि किसी और चीज़ को देखते हैं तो ठीक है। परन्तु यदि आप भ्रम दर्शन करना शुरु कर देते हैं तो आपमें भ्रम विकसित हो जाता है। इसकी सबसे बड़ी कमी यह है कि लोग इसके बारे में झूठ बोलने लगते हैं। मैं सभी के विषय में जानती हूँ। भ्रम दर्शन यदि शुरु हो जाता है तो यह चैतन्य लहरियों के लिए बहुत भयानक होता है। कुछ लोगों को स्वयं पर पूर्ण विश्वास है यह बात मैं देखती हूँ। वो पूरे विश्व को बताते हैं और यह कहते हुए कि 'इस चीज़ का चैतन्य ठीक नहीं है', 'उस चीज़ का चैतन्य ठीक नहीं है', सभी पर रौब डालते हैं जबकि वास्तव में उन्हें चैतन्य लहरियों पर स्वामित्व नहीं होता। अब मुझे सावधान होना पड़ेगा। किसी गुरु की तरह से मैं बात नहीं कर सकती। इसलिए मैं कहती हूँ कि ठीक है आप स्वयं को बन्धन दे लें और अपने हाथ मेरी ओर करके देखें। किसी तरह से यदि उन्हें पता चल जाए कि मैं जान गई हूँ कि वो झूठ बोल रहे हैं तो बस वो तो समाप्त हो गया। अत: उनका झूठ भी मुझे स्वयं तक रखना पड़ता है। इस बारे में मैं बहुत सावधान हूँ क्योंकि मैं जानती हूँ कि वो लोग भयानक फिसलन पर खड़े हुए हैं। किसी चीज़ को कहने की मेरी शैली चाहे रूखी ना हो फिर भी वो चीज़ घटित हो सकती है। अत: व्यक्ति को यह बात समझ लेनी है कि सत्य पर डटे रहने में ही हमारा हित है। अपने विषय में हमारे जो विचार हैं उनसे हमें बहकना नहीं चाहिए।

विषयचित्त

एक अन्य बाधा जो व्यक्ति में आ जाती है वह है 'विषयचित्त'। इस स्थिति में हमारा चित्त उन पदार्थों की ओर आकर्षित होता है जो आत्मसाक्षात्कार से पूर्व हमें रुचिकर थे, जिन पर पहले हमारा चित्त होता था। मान लो आपका चित्त क्रिकेट की ओर आकर्षित था। ठीक है, परन्तु आप को यह रोग नहीं होना चाहिए। मेरा कहने से अभिप्राय यह है कि क्रिकेट का अर्थ यह नहीं है कि आप क्रिकेट का बल्ला ही बन जाएं। तथा क्या आप किसी अन्य चीज़ के लिए बिल्कुल बेकार हैं, सभी व्यावहारिक कार्यों के लिए क्या आप मर चुके हैं। किसी भी

चीज़ के प्रति पागल आकर्षण आप के चित्त को अत्यन्त गलत अवस्था में ले जाता है। अत: यह सहजयोगियों के लिए ठीक नहीं है।

आज का प्रवचन मुख्यत: सहजयोगियों के लिए है। मैं बता रही हूँ कि आत्मसाक्षात्कार को बनाए रखने के मार्ग में हमारे सम्मुख कौन सी अन्तर्निहित कठिनाईयाँ हैं। इन्हें समझ लेना बहुत ही आवश्यक है।

इन कठिनाईयों के अतिरिक्त दो अन्य बहुत बड़े खतरे, जिन के कारण हम कष्ट उठाते हैं, वो निम्नलिखित हैं। एक तो लोग **भूतबाधित** हो जाते हैं और उनके मस्तिष्क में बहुत सी धारणाएँ भर जाती हैं। वो भजन गाने लगते हैं आदि-आदि। यह चीज़ें मुझे उलझन में डाल देती हैं, मेरी समझ में नहीं आता कि क्या कहा जाए। उनके माध्यम से बोलता हुआ असुर मुझे दिखाई देता है। परन्तु मेरी समझ में नहीं आता कि किस प्रकार उन्हें बताया जाए कि 'कृपा करके बन्द कर दीजिए।' मेरी स्तुति वो लोग गाते हैं फिर भी मुझे पता होता है कि वास्तव में यह क्या है। पर वे लोग मेरे पास आते हैं और कहते हैं," श्रीमाताजी, हम आपको एक भजन सुनाएंगे।" ठीक है। मैं कुछ नहीं कह सकती क्योंकि वो लोग नहीं मानते हैं कि उन्हें यह ज्ञान कहाँ से मिलता है। उनके अन्दर यह कार्य कोई अन्य कर रहा है। इन सभी समस्याओं के कारण आप भूत बाधित हो जाते हैं। उस दिन कोई व्यक्ति मेरे पास आया और कहने लगा," श्रीमाताजी, मुझे स्वयं पर बहुत विश्वास होता चला जा रहा है।" वास्तव में दृढ़ विश्वास, तथा मैं कोई बहुत बड़ा कार्य करना चाहता हूँ।" और उसने वो कार्य किया। पहले तो उसने अपने अन्दर वो बाधा आते हुए देखी और फिर बड़े ज़ोर शोर से कार्य किया। मैं जानती हूँ कि सभी लोग अब उससे नाराज़ हैं परन्तु मैं नाराज़ नहीं हूँ क्योंकि उसने जो भी कुछ किया भूतबाधित हो कर किया। कोई नहीं जानता कि भूतबाधित अवस्था में व्यक्ति कौन सा पागलपन कर बैठे। कहने से अभिप्राय यह है कि ऐसे लोगों को तो पागलखाने पहुँच जाना चाहिए परन्तु सहजयोग के कारण वो उस स्थान पर स्थिर नहीं हुए हैं जहाँ उन्हें होना चाहिए।

दो अन्य स्थितियाँ हैं जिनमें कुण्डलिनी ऊपर को उठती है और फिर नीचे गिर जाती है। मनुष्य के अन्दर यह अन्तर्निहित भय है। बहुत से लोगों ने मुझसे पूछा," श्रीमाताजी, आत्मसाक्षात्कार प्राप्त कर लेने के पश्चात् क्या यह स्थिति बनी रहती है?" यह स्थिति बनी रहती है। इसका कुछ अंश बना रहता है। कभी तो इसका बहुत थोड़ा हिस्सा बना रहता है और कभी पूरी की पूरी कुण्डलिनी वापिस खिंच जाती है। यह वापिस खिंच जाती है। जब ऐसा होता है तब आप कहेंगे," हमें संदेह होने लगा है।' यह कहाँ लिखा हुआ है कि आपका उत्थान होगा और आप उस उच्च स्थिति में स्थायी रूप से स्थापित हो जाएंगे चाहे आप के अन्दर कोई भी कमियाँ रही हों। क्या यह संभव है? यहाँ से यदि मुझे भारत जाना हो तो भी मुझे रोग-अवरोधी टीकाकरण कराना होगा, पासपोर्ट लेना होगा, साक्षात्कार देना होगा। और जब आपको परमात्मा के साम्राज्य में प्रवेश करना है तब भी तो आपका जाँचा जाएगा। केवल जाँचा ही नहीं जाएगा, यदि आपको कुछ कृपा अंक दे कर यान में बिठा दिया गया है तो हो सकता है कि आपको उतरने के लिए कह दिया जाए। कुछ लोगों के साथ ऐसा होता है कि उनकी कुण्डलिनी नीचे को गिर जाती है। यह बहुत ही

भयानक चिन्ह है। यह समस्या गलत गुरुओं के कारण, गलत स्थानों पर जाने के कारण, मृत आत्माओं तक पहुँचने तथा काला जादू करने के कारण होती है। जो लोग अवतरण नहीं हैं उनके सम्मुख सिर झुकाने से, गलत प्रकार के देवताओं की पूजा करने से, गलत प्रकार के कर्मकांड करने से, गलत समय पर व्रत रखने से, व्रत, कर्मकान्डों तथा चक्रों का मतलब न समझने से और पूर्ण सहजयोग की सम्यकता को न समझ पाने के कारण यह समस्या होती है। कुछ लोगों में, आपने देखा है कि कुण्डलिनी उठती है और तुरन्त गिर जाती है। यह अत्यन्त भयानक बात है। वास्तव में यह कष्टकर भी है।

अन्तिम खतरा, जिसका ज्ञान आपको होना चाहिए, यह है कि आपको लगने लगता है कि आप परमात्मा बन गए या किसी अवतरण सम बन गए। यह बहुत बड़ा खतरा है। तब आप कानून को अपने हाथों में लेने लगते हैं, दूसरे लोगों पर हुक्म चलाने लगते हैं तथा बहुत ही अनियन्त्रिता से कार्य करने लगते हैं तथा अपने आपसे अत्यन्त संतुष्ट हो जाते हैं। यह बहुत बड़ा खतरा है।

विनम्रता एक मात्र मार्ग है जिससे आप जान सकते हैं कि आपके सम्मुख विशाल सागर है। ठीक है कि आप नाव पर सवार हो गए हैं परन्तु आपने बहुत कुछ सीखना है, बहुत कुछ समझना है तथा अभी आपने अपने चित्त की ओर ध्यान देना है, अपनी चेतना की ओर ध्यान देना है। अभी आपने इस प्रकार से कार्य करना है कि आप वास्तव में स्वयं को पूर्ण सहज-योगी के रूप में स्थापित कर सकें, जिससे की सामूहिकता आपके अस्तित्व का अंग-प्रत्यंग बन जाए और आपमें किसी भी प्रकार के संशय न रह जाएं। जब तक आपमें यह घटित नहीं हो जाता-यह मेरी ज़िम्मेदारी नहीं है, यह तो एक अवस्था है-जिसमें आपके हाथों के इशारे से कुण्डलिनी उठेगी। जब तक आप इस अवस्था को प्राप्त नहीं कर लेते तब तक कृपा करके इसे कार्यान्वित करने में लगे रहें, आलसी न बनें। आपको अपने चहुँ ओर देखना है, लोगों से मिलना है, उनसे बातचीत करनी है। जितना अधिक आप इसके बारे में बतायेंगे, जितना अधिक आप इसे करेंगे, जितना अधिक आप इसे देंगे उतना ही अधिक यह प्रवाहित होगा। जितना अधिक आप अपने घर पर बैठकर सोचेंगे, यह "ओह! मैं घर पर पूजा कर रहा हूँ", तो कुछ नहीं होगा। यह निष्क्रिय होता चला जाएगा। आपको इसे अन्य लोगों को देना होगा। अधिक से अधिक लोगों को आत्मसाक्षात्कार देना होगा, हज़ारों लोग इसे प्राप्त करेंगे। अत: यह समझ लेना आवश्यक है कि आपको इस बात से धोखा नहीं खाना कि ब्रह्मांड की सभी शक्तियां आपमें प्रकट हो गई हैं। इन शक्तियों की अभिव्यक्ति जब आपमें होगी तब आप इनके विषय में जान पायेंगे। आप कल्पना करें कि सूर्य कहे "मैं सूर्य हूँ।" क्या वो कहता है कि मैं सूर्य हूँ? कहने को क्या है? आप जा कर यदि सूर्य से पूछें,"क्या आप सूर्य हैं?" तो वो कहेगा,"हाँ मैं ही सूर्य हूँ, इस विषय में मैं क्या करूँ?" यह इतनी सहज चीज़ है कि आप अत्यंत सहज व्यक्ति बन जाते हैं, पूर्णत: सहज। न तो इसमें कोई छुपाव है और न ही कोई जटिलता, आप वही हैं। कोई आपसे अटपटा प्रश्न पूछता है तो आप कहते हैं,"इसमें पूछने वाली कौन-सी बात है?" यह सत्य है। मेरा अर्थ यह है कि मैं आत्मसाक्षात्कारी हूँ। मैं आत्मसाक्षात्कारी हूँ। इससे क्या फर्क पड़ता है?" इस सूझ-बूझ से हमें

सहज-योग में जाना है। मैं कहूँगी कि जिस चमत्कारिक ढंग से यह कार्य कर रहा है उससे मैं हैरान हूँ और यह कार्यान्वित हो रहा है। आप लोग इसे अपने अन्दर स्थापित कर सकते हैं।

अब आपमें से कुछ लोग तो परिधि रेखा (किनारे पर) खड़े हैं। उन्हें हम किनारे पर रखते हैं, यह बात आप अच्छी तरह से जानते हैं। कुछ लोग मध्य में आ जाते हैं और कुछ बहुत थोड़े से, अन्दर वाले वृत्त में (मध्य-बिन्दु) पर हैं। सभी लोग ऐसी स्थिति में हैं जहां से परिधि रेखा से उन्हें बाहर किया जा सकता है। तब आपकी समझ में नहीं आता कि सहजयोगी ने ऐसा व्यवहार क्यों किया। किसी सहजयोगी को यदि आप ऐसा व्यवहार करते हुए देखें, परिधि की बाह्य रेखा पर जाते हुए देखें तो समझ लें कि आप भी ऐसा ही कर सकते हैं। अतः आप सावधान रहें। सावधान रहें।

अतः आज जब हम ईसा-मसीह के जीवन की महान घटना का उत्सव मना रहे हैं तब हमें जान लेना चाहिए कि ईसा-मसीह हमारे अन्दर उत्पन्न हो गए हैं तथा बैथलहैम (Bethlehem) हमारे अर्न्तनिहित है। आपको बैथलहैम जाने की कोई आवश्यकता नहीं। यह हमारे अन्दर स्थित है। ईसा-मसीह वहाँ हैं और हमने उनकी देखभाल करनी है। वे अभी बालक हैं, आपने उनका सम्मान करना है और उनकी देखभाल करनी है। अतः वास्तव में प्रकाश बढ़ता है और लोग मान लेते हैं कि आप आत्मसाक्षात्कारी व्यक्ति हैं। कोई भी संदेह नहीं करेगा कि आप आत्मसाक्षात्कारी हैं।

परमात्मा आपको धन्य करें।

सहज जीवन कैसा हो व ध्यान कैसे करें

भारतीय विद्या भवन, बम्बई, 27.5.1976

परम पूज्य माताजी श्री निर्मला देवी का प्रवचन

आपसे दादर में मैंने बताया था कि सहजयोग में पहले किस प्रकार से निर्विचार की समाधि लगती है। तदात्म्य के बाद आदमी को सामीप्य हो सकता है और उसके बाद सालोक्य हो सकता है। लेकिन तदात्म्य को प्राप्त करते ही मनुष्य का interest (रुचि) ही बदल जाता है।

तदात्म्य को पाते ही साथ, मनुष्य की अनुभूति के कारण, वो सालोक्य और सामीप्य की ओर उतरना नहीं चाहता। माने ये कि जब आपके हाथ में चैतन्य की लहरियाँ बहने लग गई और जब आप को दूसरों की कुण्डलिनी समझने लग गई और जब आप दूसरों की कुण्डलिनी को उठा सकें तब उसका चित्त इसी ओर जाता है कि दूसरों की कुण्डलिनी देखें और अपनी कुण्डलिनी को समझें। अपने चक्रों के प्रति जागरूक रहे और दूसरे के भी चक्रों को समझता रहे।

अगर आप आकाश की ओर देखियेगा, बादल हों तब भी देखें, आपको दिखाई देगा कि अनेक तरह की कुण्डलिनी आपको दिखाई देगी। क्योंकि अब आपका चित्त कुण्डलिनी पर गया है, आपको कुण्डलिनी के बारे में जो कुछ भी जानना है, जो कुछ भी देखना है, जो कुछ सामीप्य है, वो जान पड़ेगा। कुण्डलिनी के बारे में interest जो है वो बढ़ जाता है। बाकी के interest अपने आप ही लुप्त हो जाते हैं।

ऐसा ही समझ लीजिये कि आप जब बचपन को छोड़कर जवानी में आ जाते हैं, तो आपकी जवानी के जो interest हैं – आपकी नौकरी, धन्धा, बीवी-बच्चे- उसी में आपका interest आ जाता है आपके बाकी के जो कुछ भी शौक हैं, वो गिरते जाते हैं, अनुभूतियाँ गिरती जाती हैं और नई अनुभूतियों की ओर आपकी दृष्टि जाती है। या इस प्रकार समझें कि एक मनुष्य को गाने में रुचि नहीं है और किसी तरह से उसको गाने में रुचि हो गई-शास्त्रीय संगीत में उसे रुचि हो गई, तब फिर उसे कोई सी भी अशास्त्रीय संगीत की महफिल हो, वहाँ मजा नहीं आने वाला।

उसी प्रकार सहजयोग में आपकी हालत हो जानी चाहिये। और वास्तविक, बाकी और जो भी आदतें हैं या जो कुछ भी शौक हैं वो तो आपके अन्दर धीरे-धीरे आते हैं, प्रयत्न पूर्वक आती हैं। इसके कारण वो रुचि आपके अन्दर बहुत अच्छी तरह से चिपक जाती है। हालांकि सहजयोग से आपके अन्दर क्रान्ति हो गई है – आप एक नये awareness (चेतना) में, एक नई चेतना में आये हुए हैं, आपको वाइब्रेशन (vibrations) समझ में आते हैं, आपको दूसरों की कुण्डलिनी दिखाई देती है, आप में से बहुत लोग जागृत भी कर सकते हैं। आप बहुत-से लोग पार भी कर सकते हैं। हजारों लोगों को आपने ठीक भी किया है। नई शक्ति में आपने पदार्पण किया है और इससे आप प्लावित हैं।

लेकिन यह सब करने में एक ही बात का दोष रह गया है कि आपने कोई भी प्रयत्न नहीं किया। बगैर प्रयत्न के ही सब स्वयं हो गया। इसके ही कारण हो सकता है। बहुत-से लोग जो कि सहज-योग में वाइब्रेशन पा भी लेते हैं, ऊंचे उठ भी जाते हैं, तो भी उनका चित्त परमात्मा की ओर, आत्मा की ओर, कुण्डलिनी की ओर नहीं रहता है और अब भी वो चित्त बार-बार, गलत जगह पर जाता रहता है।

आपने पूछा था कि पाने के बाद क्या करना है? पाने के बाद देना ही होता है, यह बहुत परम आवश्यक चीज़ है कि पाने के बाद देना ही होगा। नहीं तो पाने का कोई अर्थ ही नहीं।

और देने के वक्त में एक बात-सिर्फ एक छोटी सी बात-याद रखनी है कि जिस शरीर से, जिस मन से, जिस बुद्धि से, माने इस पूरे व्यक्तित्व से, आप इतनी जो अनुपम चीज़ दे रहे हैं, वो स्वयं भी बहुत सुन्दर होनी चाहिये। आपका शरीर स्वच्छ होना चाहिये। शरीर के अन्दर कोई बीमारी नहीं होनी चाहिये। अगर आपको कोई बीमारी है-बहुत-से सहजयोगियों के ऐसा भी होगा कि उनके अन्दर कोई शारीरिक बीमारी है-तो सहजयोग से पहले तो वो कहते होंगे कि 'साहब, मुझे यह बीमारी ठीक होनी चाहिये, वो बीमारी ठीक होना चाहिये।' लेकिन सहजयोग के बाद में इनका चित्त नहीं रहेगा बीमारी की ओर। जो हो 'अरे हो जायेगा ठीक, चलो सब ठीक है।' ये बात गलत है आपको कोई-सी भी ज़रा-सी भी तकलीफ हो जाये आप फौरन वहाँ हाथ रखें, अपनी तबियत ठीक कर सकते हैं। अपनी physical side (शारीरिक भाग) बहुत साफ रख सकते हैं। बहुत ज्यादा उसमें कुछ करने की जरूरत नहीं। स्नान करना, स्वच्छता से रहना और अपनी physical side ठीक करना।

लेकिन इसके लिए मैंने एक चीज का कहा है, जैसे कहते हैं कि सवेरे सबको bathroom (शौच) जाना चाहिये, शरीर साफ करना चाहिये। सहज योगियों के लिये सोने से पहले पानी में बैठना पांच मिनट अत्यन्त आवश्यक है। वो चाहे कोई भी हो। आप बड़े पहुँचे हुए हो, आप कहें 'हमें नहीं पकड़ता'-इससे मतलब नहीं है। आपको 5 मिनट पानी में बैठना चाहिये। आप लोगों को यह आदत लगे इसलिये मैं जबरदस्ती बैठती हूँ कभी-कभी कि चलो मैं भी पानी में बैठती हूँ तो मेरे सहज योगी बैठेंगे। यह आदत बहुत ही अच्छी है।

एक पाँच मिनट पानी में सब सहजयोगियों को बैठना चाहिये। फोटो के सामने दीप जलाकर के, कुमकुम वगैरह लगाकर के, अपने दोनों हाथ रख कर, दोनों पैर पानी में रखकर सब सहजयोगियों को बैठना चाहिये। आपके आधे से ज्यादा problem solve (समस्यायें हल) हो जायेंगे, अगर आप यह करें। चाहे कुछ हो जाये, आपके लिये पांच मिनट कुछ मुश्किल नहीं हैं। सोने से पहले पानी में सबको बैठना चाहिये। इससे आपको जो है, आधे से ज्यादा पकड़ना खत्म हो जायेगा।

सवेरे के time (समय) में जल्दी उठना चाहिये। हम लोगों का सहजयोग दिन का काम है, रात का नहीं, इसलिये रात को जल्दी सोना चाहिये। 6 बजे सोने की बात नहीं कह रही मैं, लेकिन करीबन 10 बजे तक सबको सो जाना चाहिये। 10 बजे के बाद सोने की कोई बात नहीं। सवेरे जल्दी उठना चाहिये।

सवेरे के time में जल्दी उठकर के, नहा धोकर के ध्यान करना चाहिये। सवेरे ध्यान में बैठना चाहिये। जैसे कि हमारे यहाँ हम लोग सवेरे उठ करके अपना मुँह धोते हैं और सालों से धोते आ रहे हैं, हर साल धोते हैं, जिन्दगी भर धोते रहे, उसी तरह हर मनुष्य को सवेरे उठकर के-सहज योगी को चाहिये कि वो ध्यान करे। यह आदत लगाने की बात है। लेकिन मैंने देखा है कि कई लोग, चार बजे या पांच बजे उठना, उनको बहुत मुश्किल होता है। उसका कारण एक है। मनुष्य को मैंने बहुत study (अध्ययन) किया है, उसकी बारीक चीज़ें बहुत

समझो हैं। बड़ा मजा आता है उसको study करने में मुझे। वो अपने साथ किस तरह से भागता है, वो अपने साथ ही किस तरह से arguments (दलीलें) देता है, वो देखने लायक चीज है, मनुष्य की। अपनी ही नाक कटाने के लिये खुद ही वो explanations (सफाई), खुद ही कैसे देता रहता है। वो इस प्रकार कभी-कभी होता है, कि जैसे "हम तो सवेरे जल्दी उठ ही नहीं सकते, माँ!" भई! कितने बजे सोते हो रात को? "बारह बजे, पर मैंने तय किया था कि चार बजे उठूंगा।" हो ही नहीं सकता। लेकिन एक दिन आप जल्दी सोयें और एक दिन आप उठें, हर हालत में, तो आप जल्दी सो ही जायेंगे, आप जग नहीं सकते। दो दिन आप ऐसा कर लीजिये, शरीर ऐसा है, उसको आदत लग जायेगी।

सवेरे जल्दी उठने से, सवेरे के time में receptivity (ग्रहण-शक्ति) ज्यादा होती है मनुष्य की। और इतना ही नहीं, उस वक्त में संसार में बहुत अत्यन्त सुन्दर प्रकार से चैतन्य भरा रहता है।

तो शरीर की दृष्टि से मैंने आपको बताया और दूसरा यह कि सवेरे उठकर ध्यान करना।

अब ध्यान कैसे करना है, सोचें! ध्यान कैसे करना-सवेरे उठकर?

बड़े ही नत-मस्तक होकर के, अपने को हृदय में नत कर लें। पहली चीज है नत करना। Humble down yourself (स्वयं को नम्र करें)।

किसी ने यह सोच लिया कि मैंने बहुत पा लिया, या मैं बहुत बड़ा भारी कोई सन्त, साधु हूँ, महात्मा हूँ, तो समझ लीजिये तो वो गया-सहज योग से गया। अत्यन्त नम्रतापूर्वक अपने हृदय की ओर ध्यान करके, नत-मस्तक होकर, फोटो के सामने दोनों हाथ करके, शान्तिपूर्वक permission (आज्ञा) लेकर के बैठें।

बात-बात में क्षमा माँगनी पड़ती है। सो, उस वक्त भी क्षमा माँगकर-कि 'हमसे अगर कोई गलती हो तो उसे माफी करके, ध्यान में आप हमें उतारिये।' इस तरह की प्रार्थना करके। जिन्हों से हमने बैर किया है, सबको माफ कर देते हैं और हमने अगर किसी से बैर किया है, उसके लिये तुम हमें माफ कर दो।' अत्यन्त पवित्र भावना मन में लाकर के और आप ध्यान में जायें। आँख बन्द करके आत्मा की ओर ध्यान करें।

अब कितने मिनट करें? इससे कोई मतलब नहीं होता। यह सवाल पूछना बहुत गलत बात है। आप चाहे पाँच मिनट करिये चाहे दस मिनट करिये। पाँच-दस मिनट एकाग्रता से आप ध्यान करें।

नतमस्तक होकर के आप ध्यान करें।

पर ध्यान करने से पहले-इसको समझ लें-ध्यान करने से पहले, जहां बैठ रहे हैं, उस आसन में बन्धन दें। अपने को बन्धन दें, अपने शरीर को बन्धन दें। सात मर्तबा अपने शरीर को बन्धन दें। स्थान को बन्धन दें, फोटो को बन्धन दें। वो तो हो गया mechanical (यन्त्रवत्) बाहर करने का क्योंकि कुछ लोग तो यूँ-यूँ कर लेते हैं, हो गया काम खत्म। ऐसी बात नहीं है।

विचारपूर्वक अत्यन्त श्रद्धा से जिस तरह से पूजा में बैठे हैं, अत्यन्त श्रद्धा से और मौन रहकर के और बन्धन दें। उस वक्त में, ऐसे नहीं जैसे पूजा में लोग कहते हैं कि 'भई ये ले आ, वो ले आ', इस तरह से नहीं।

और उसके बाद अपने मन को बन्धन दें। अब मन कहां होता है? किसी ने आज तक मुझ से नहीं

पूछा कि 'माँ, मन कहां होता है? मन यहां होता है, यहां उसकी शुरूआत है-**माने विशुद्धि चक्र और आज्ञा चक्र को बहुत अच्छी तरह बन्धन दें। और यह विचार करें कि 'प्रभु! हम तेरे ही बन्धन में रहें, हम पर कोई बुरा असर न आए।'** अत्यन्त नत-मस्तक होकर। और उस वक्त में यह सोचकर कि हम साक्षी हैं और सब चीज से हम अलग हटकर के, हम निर्मल हैं, उस चीज से, हम उससे अछूते हैं। सब चीज से अपने को हटा करके और आप बैठ रहे हैं।

आप ऐसा प्रयत्न रोज करें। आपको इसी की एक प्रकार से आदत लग जायेगी। अत्यन्त श्रद्धा पूर्वक ध्यान करें। सवेरे के समय, चाहे दस मिनट, चाहे आध घण्टे-उसका कुछ फर्क नहीं पड़ता। ध्यान करते वक्त में कुछ हाथ ऊपर नीचे मत करिये। **ध्यान करते वक्त सिर्फ फोटो की ओर दृष्टि रखते रखते आँखें बन्द कर लें और कोई हाथ-पैर घुमाने की जरूरत नहीं। उस वक्त कोई-सा भी चक्र जो खराब हो, उस चक्र की ओर दृष्टि करने से ही वो चक्र ठीक हो जायेगा क्योंकि उस वक्त मैंने कहा है, receptivity (ग्रहण शक्ति) ज्यादा रहती है,** सवेरे के time (समय) में।

पहले तो अपने **चक्र वगैरह शुद्ध हो गये। इसके बाद अपने आत्म-तत्व पर विचार करें या अपने आप पर। आत्मा की ओर चित्त ले जायें।** आत्मा कहाँ होती है? किसी ने मुझ से यह नहीं पूछा आज तक कि "माँ, आत्मा कहाँ होती है?"

आत्मा हमारे हृदय में होती है, लेकिन उसकी (पीठ) seat जो है यहाँ सहस्रार के ऊपर है। तो इसलिये मैंने कहा था कि हृदय में नत मस्तक हों **और चित्त जो है, सहस्रार की ओर ले जाकर आत्मा की ओर समर्पित हों।** विचारपूर्वक, आत्मा की ओर समर्पित हों।

आत्म तत्व का essence (सार) क्या है? आत्म तत्व जो है, वो पवित्रता है-पूरी निर्मल पवित्रता कहिये। उसकी ओर नजर करें। वो पूर्णतया अलिप्त है। किसी भी चीज में लिप्त नहीं है। जो **भी चीज आपसे लिपटी हुई है, उसी के कारण आप आत्मा से दूर हैं। आत्म-तत्व का विचार करें। और यह आत्म-तत्व प्रेम है।** अनेक बार इसका विचार करें। यह बहुत बड़ा विचार है-आत्म तत्व प्रेम है।

बहुत अनेक धर्म संसार में संस्थापित हुये हैं। लेकिन उसमें प्रेम की व्याख्या कोई कर नहीं पाया। उसके कारण उसके अनेक विपर्यास हो गये हैं। प्रेम की व्याख्या हो नहीं पाती। लेकिन **प्रेम वही शक्ति है जो आपके हाथ से बह रही है। वही चेतना** है जिसे लोग चेतना के नाम से जानते हैं। लेकिन यह नहीं जानते कि यह प्रेम है। चेतना को हम ऐसी शक्ति समझ लेते हैं जैसे बिजली और पंखा है। नहीं, **आत्म-तत्व प्रेम है।**

यह शब्द 'प्रेम' कहते ही साथ आपके अनेक बन्धन टूट जायेंगे। जितना झूठ है, असत्य है, वह प्रेम के विरोध में है। आप किसी को अगर डांटते भी हैं और उसको सत्य बता रहे हैं तो आप प्रेम कर रहे हैं। आप स्वयं प्रेम हैं। इसलिये प्रेम-तत्व पर आप विचार करते ही आप आत्म-तत्व में उतर सकते हैं।

ध्यान में कोई सा भी विशेष विचार नहीं लेने का है। लेकिन **आप यह कह सकते हैं कि "मैं, वही प्रेम तत्व हूँ, मैं वही आत्म-तत्व हूँ, मैं वही प्रभु**

की शक्ति हूँ।" आप इसे कह सकते हैं। इस तरह **से दो-तीन बार कहते ही आप आशीर्वादित होयेंगे। क्योंकि आप सत्य कह रहे हैं, आपके अन्दर से वाइब्रेशन (vibrations) जोर से चलने लगेंगे।**

अब रोजमर्रा के जीवन में क्या-क्या करना चाहिये?

रोजमर्रा के जीवन में आपको पता होना चाहिये कि आपके अन्दर शक्ति प्रेम-तत्व की है। **आप जो भी कार्य कर रहे हैं, क्या प्रेम में कर रहे हैं? या दिखाने के लिये कर रहे हैं कि आप बड़े भारी सहजयोगी हैं?** हम भी किसी को कोई बात कहते या डांटते हैं तो हम देखते हैं कि दूसरे दिन वो आकर के सहजयोगियों में बैठ करके हमें गालियां देते हैं और उसके बाद कहते हैं कि हमारे वाइब्रेशन क्यों चले गये! तो इस तरह की अगर आप मूर्खता करते हों तो बेहतर है कि आप लोग सहजयोग में न ही आयें।

सहजयोग में वही आदमी आ सकता है और चल सकता है जो कुछ लेना चाहता है। उसको देने का कोई अधिकार नहीं है, उसे लेना ही है हमसे। वह अगर देना चाहेगा, उसकी शक्ति जब वो हो जायेगी, तो बहुत ही बढ़िया चीज हो जायेगी, लेकिन आप तभी दे पाते हैं, जब आप ले पाते हैं। इसलिये पहले लेना सीखिये। हमारे अन्दर क्या दोष है? रोज के जीवन में हम यह देखते चलें कि हम क्या चीज दे रहे हैं? हम प्रेम दे रहे हैं? क्या हम स्वयं साक्षात् प्रेम में खड़े हैं? हम सबसे लड़ते हैं, सबसे झगड़ा करते हैं, सबको परेशान करते हैं और हम सोचते हैं कि हम सहजयोगी हैं। इस तरह की गलतफहमी में नहीं रहना। अपने साथ पूर्णतया दर्पण के रूप में रहना चाहिये, माने अपने को पूरे समय देखते रहिये। समझ लीजिये, हमारे माथे में कोई चीज लग गई तो आप बतायेंगे कि "माताजी, आपके सिर में कुछ लगा है, उसे पोंछ लीजिये।" इसी प्रकार आप अपने को देखते रहें कि 'देखिये हमारे यहाँ यह चीज लग गई है, इसको हम पोंछ लेते हैं।'

रोजमर्रा के जीवन में आपका जीवन उज्ज्वल होना चाहिये। आपके मुख में कान्ति आनी चाहिये। आपके व्यवहार में सुन्दरता आनी चाहिये। आपको प्रेममय होना चाहिये। ऊँट के, जैसे आप अगर बिल्कुल ही रसहीन हों तो आप सहजयोगी नहीं हैं, यह आपको पता होना चाहिये। जबरदस्ती के आप सहजयोगी बने हैं, वह भी हम आपको चला रहे हैं इसलिये आप बैठे हुए हैं। नहीं तो हमें आप माफ कर दें और आप सहजयोग में न आयें। एक दिन आप खुद ही निकल जायेंगे। इस तरह के लोग, जिनमें प्रेम नहीं है, जो अपने को सोचते हैं कि हम बड़े बढ़िया आदमी हैं और बड़े कमाल के आदमी हैं, और ये हैं, वो हैं, वो बिल्कुल सहज योग के लिये व्यर्थ हैं। ऐसे लोगों को चाहिये कि जायें, दूसरे गुरुओं के जूते खायें और वहाँ रहें।

यहाँ पर सहजयोग में आप परमात्मा के एक instrument (यन्त्र) बनने आ रहे हैं। अत्यन्त नम्रता आपके अन्दर होनी चाहिये, अत्यन्त नम्रता। आपको घमण्ड छोड़ना चाहिये। लोग कहते हैं कि सन्यास लेना चाहिये। मैं कहती हूँ कि **पहले घमण्ड से आप सन्यास लीजिये। क्रोध से आप सन्यास लीजिये। कपड़ों से नहीं लीजिये। कपड़े उतार देने से कोई सन्यास नहीं होता है। सन्यास का अर्थ होता है कि अपने क्रोध, काम, मोह, मद, मत्सर आदि षट्-रिपुओं से सन्यास लेने को ही**

सन्यास कहते हैं-सन्यस्त। दूसरे सन्यास की बातचीत नहीं है।

तो, अपने रोज के व्यवहार में अत्यन्त शान्ति से, सबसे प्रेम से व्यवहार करें। अपने बाल बच्चे, घरवाले, इन सबसे सहजयोग की बातचीत करें। सहजयोग का विवरण करें। अपने दोस्त बदल लीजिये, अपना उठना-बैठना बदल लीजिये। 'ये' आपके रिश्तेदार हैं, 'ये' आपके सगे हैं, इन्हीं से बातचीत करें। और "ये" लोग आपको बतायेंगे कि हम लोग एक नई ही दुनिया में आ गये हैं और हमारे पास एक नये वाइब्रेशन्स (चैतन्य लहरियाँ) हैं।

जब भी आप सफर करें, कहीं बाहर जायें, किसी गाँव में जाना है, तो बता रहे थे-अभी राहुरी से आये हैं-कि हम अपने साथ में जैसे सब लोग लेकर चलते हैं सब चीजें अपनी travelling (सफर) की, वैसे हम अपने साथ में थोड़ा-सा "तीर्थ"-वो मेरे पैर के पानी को "तीर्थ" कहते हैं-"तीर्थ" और कुमकुम और यह सब vibrated (वाइब्रेटेड) लेकर हम चलते हैं। रास्ते में कोई आदमी बीमार दिखाई दिया-चलो उसको "तीर्थ" पिला दिया। कोई आदमी ने धर्म की चर्चा की, उसे फोटो दिखा दिया कि ये 'माताजी' हैं और तुम चाहो तो तुमको पार कर सकते हैं। जहाँ जो आदमी मिल जाये। वह अपने साथ रखे रहते हैं-"चलिये हम आपको कुमकुम लगा देते हैं, देखिये आपको कैसा लगता है। ये हमारी "माताजी" हैं।" पूरे समय दिमाग इधर-उधर दौड़ता रहता है कि सहजयोग को किस तरह से अपने जीवन में प्लावित कर सकते हैं। उसी समय आप देखिये कि आप बहुत गहरे उतर सकते हैं।

लेकिन **कुछ लोग ऐसे हैं कि सहजयोग में सिर्फ ऐसे आते हैं, जैसे मन्दिर में आये और चले गये। और फिर उसका दुष्परिणाम हमेशा आयेगा।** यहां पर ऐसे लोग हैं, अभी बैठे हुए हैं, कि जिन्होंने जब से सहजयोग से पार हुए हैं तब से उनको एक बीमारी नहीं आई। महा बीमार थे, उनको कभी बीमारी नहीं आई। एक बार भी वह डाक्टर की सीढ़ी नहीं चढ़े। कभी उनको कोई तकलीफ नहीं हुई। उन्होंने एक दवा नहीं ली, जब से वह सहजयोग में आये। बुड्ढे भी हैं उनमें से कुछ लोग, जो हमेशा डाक्टर के पास जाते थे और अस्पतालों में घूमा करते थे, वो कभी भी नहीं गये। ऐसे यहां पर बहुत-से, अनेक उदाहरण हैं। इतना ही नहीं, उन्होंने दूसरों का भी भला किया।

इसका कारण यह है कि जो कुछ भी स्वास्थ्य के लिये, एक सहजयोगी के लिए आवश्यक है, वो करते रहे, इस वजह से वो ठीक हैं। आपस में मिलते रहे। आपस में सब तुम डाक्टर हो और सब patient (रोगी) हो। और डाक्टर लोग आपस में फीस नहीं लेते, उस प्रकार तुम आपस में फीस नहीं लेते। आपस में treatment (इलाज) करो, आपस में पूछ लो और इसमें बुरा मानने की कोई बात नहीं। किसी ने कहा कि आपका सहस्रार पकड़ा है। "तब तो बड़ी शर्म की बात हो गई। वो तो हमारे विरोध में बैठ जायेगी बात। तो मैंने उससे कहा कि भई सहस्रार ठीक कर दो, पता नहीं कैसे आदमी के साथ मैं बैठ गया।"

किसी ऐसे आदमी के साथ कभी नहीं बैठना चाहिये जो सहजयोग की बुराई करता है। सहस्रार फौरन पकड़ जायेगा। ऐसा आदमी अगर बोले तो कान बन्द कर लो और ऐसे आदमी से कहो कि तुम दूर बैठो। हमको तुम से मतलब नहीं और तुम हमारे से बात मत करो, बस। हमको अपना कोई

बुरा नहीं करना। आप कौन होते हैं हमसे बात करने वाले? आप यहां माताजी की वजह से हमसे मिले हैं, आप चुप रहिये। ऐसा जो भी आदमी बात करे तो 'बस, बस, बस' करिये। आपका सहस्रार पकड़ेगा, फिर एक-एक चक्र पकड़ेंगे, फिर थोड़े दिन में आयेंगे कि "माताजी, मुझे कैन्सर हो गया।" और कैन्सर की बीमारी जो है वो तो बिल्कुल सहस्रार की बीमारी है-पक्की, समझ लीजिये। कैन्सर से अगर बचना है तो अपना सहस्रार साफ रखिये। सहस्रार जिन लोगों ने पकड़ना शुरु कर दिया तो कैन्सर की शुरुआत हो गई, मैं आपको बता रही हूँ। सहस्रार हमेशा साफ रखो, और हो सकता है, आज नहीं तो कल, आध साल बाद आपको पता होगा कि साहब हमको कैंसर हो गया।

तो क्यों न अभी से अपने को स्वास्थ्यपूर्ण रखें। और इतना ही नहीं, सहजयोग का कार्य करें, जिस के कारण हम परमात्मा के राज्य में बैठे हैं। और जब कल संसार में उन लोगों को चुना जायेगा, जो परमात्मा के हैं, उनमें से आप लोग श्रेष्ठतम लोग होंगे। क्यों न ऐसा कार्य करें जिससे यह व्यर्थ का समय हम बर्बाद कर रहे हैं-इसके घर जायें, रिश्तेदार के घर खाना खायें, फलां के घर घुसो, उसकी बुराई करो-छोड़-छाड़ करके और अपने मार्ग को ठीक बनायें और ऐसा जीवन बनायें कि संसार में उन लोगों का नाम हो। सबको यह सोचना चाहिये।

कोई यह न सोचे कि 'भई अब तो मेरी उम्र ही क्या रह गई है, अब तो क्या कर सकता हूँ?' सो बात नहीं है। आप मरेंगे ही नहीं। आप मरते हैं, फिर आप पैदा होते हैं। फिर आप मरेंगे, फिर आप पैदा होयेंगे। यह चक्कर चलते रहेंगे। तो क्यों न एक साल के अन्दर सभी चीज़ को खत्म कर सकते हैं-चाहें तो आप एक हफ्ते में भी खत्म कर सकते हैं। एक बार निश्चय मात्र करना है, एक क्षण-तो भी खत्म हो जायेगा।

अपने जीवन को कुछ विशेष करना है, एक बार इतना निश्चय कर लेने से ही सहजयोग का लाभ अत्यन्त हो सकता है, ये आप जानते हैं।

शरणागति होनी चाहिये। जरूरी नहीं है कि मेरे पैर पर आकर। शरणागति मन से होनी चाहिये। बहुत-से लोग पैर पर आते हैं, शरणागति बिल्कुल नहीं होती। शरणागत होना चाहिये। अगर शरणागत रहे अन्दर से, पूर्णतया शरणागत रहें, तो पूर्णतया, आपके अन्दर कुण्डलिनी जो है, सीधे आत्म-तत्व पर टिकी रहेगी, जैसे कि एक दीप की लौ रहती है उस तरह से एक भी flickering (झिलमिलाना, कभी मन्द कभी तीव्र होना) नहीं होता, लेकिन शरणागत रहें।

शरणागत रहने में आनन्द है, उसी में सुख की प्राप्ति है, उसी में परमात्मा की प्राप्ति है।

बहुत अनुपम, विशेष (unique) चीज है, सहज योग। इसको समझें और इसमें रत रहें। जितना आप उसमें तदात्म्य पायेंगे और उतना ही आपका आत्म-तत्व चमक सकता है।

कोई चीज महत्वपूर्ण नहीं है सिवाय इसके कि आप स्वयं प्रकाश बनें। और जिनको बेकार की बातें सूझती हैं उनके लिये बेहतर है कि वो उस चीज को छोड़ दें, उनकी बात नहीं है।

अब आखिरी बात बताऊँगी। उसको बहुत समझ के और विचारपूर्वक करें।

हमारे अन्दर स्वयं ही दुष्ट प्रवृत्तियां हैं। हमारे ही अन्दर स्वयं बहुत-सी काली प्रवृत्तियाँ हैं जिसे negativity (निगेटिविटी) कहते हैं। वो जोर बांधती

हैं। उनके कब्जे में आना अपने को शैतान बनाना है, आप चाहें तो शैतान बन सकते हैं और आप चाहें तो परमात्मा बन सकते हैं। शैतान अगर बनना है तो बात दूसरी है। उसके लिये मैं गुरु नहीं हूँ। भगवान बनना है तो उसके लिये मैं गुरु हूँ। लेकिन शैतान से बचना चाहिये।

पहली चीज है कि अमावस्या की रात या पूर्णिमा की रात left और right side दोनों तरफ में आपके dangers (खतरे) होते हैं। दो दिन विशेष कर, अमावस्या की रात्रि को और पूर्णिमा की रात्रि को बहुत जल्दी सो जाना चाहिये। भोजन करके, नत हो के, ध्यान करके, चित्त सहस्रार में डालकर, बन्धन डाल के सो जाना चाहिये। मतलब चित्त सहस्रार में जाते ही आप अचेतन (unconscious) में चले गये। वहां अपने को बन्धन में डाल दिया, आप बच गये-दो रात्रि को विशेष रूप से, और जिस दिन अमावस्या की रात्रि हो उस दिन, विशेष कर अमावस्या के दिन, आपको शिवजी का ध्यान करना चाहिये। शिवजी का ध्यान करके, उन के हवाले अपने को करके सोना चाहिये-आत्म तत्व पर। और पूर्णिमा के दिन आपको श्री रामचन्द्रजी का ध्यान करना चाहिये। उनके ऊपर अपनी नैया छोड़कर। रामचन्द्रजी का मतलब है क्या-creativity (सृजन शक्ति)। अपनी जो creative powers (रचनात्मक शक्तियाँ) हैं उनको पूर्णतया समर्पित करके, और आपको रहना चाहिये। इन दो दिन अपने को विशेष रूप से बचाना चाहिये।

हालांकि, सप्तमी और नवमी दो दिन विशेषकर आपके ऊपर हमारा आशीर्वाद रहता है। सप्तमी और नवमी के दिन उसका ख्याल रखना। सप्तमी और नवमी के दिन जरूर कोई ऐसा आयोजन करना जिसमें आप ध्यान अपना पूरा करें। सामूहिक ध्यान उसी जगह करना जहां मेरा पैर पड़ा हुआ है, जो चीज शुद्ध हो चुकी है। **सामूहिक ध्यान अपने घर में भी किसी के साथ बैठकर मत करिये। अपने रिश्तेदारों के साथ भी बैठ करके सामूहिक ध्यान नहीं करना चाहिये। जिस जगह मैंने कहा है वहीं सामूहिक ध्यान करना है।** और बैठकर सहजयोग की चर्चा भी बहुत देर तक ऐसी जगह नहीं करनी चाहिये जहां मेरा पैर पड़ा नहीं क्योंकि वहां तुम्हारे अन्दर के भूत आकर बोलने लगेंगे और आपस में झगड़ा शुरु हो जायेगा क्योंकि तुम लोग अब भी भूतों के कब्जे से बचे हुए लोग नहीं हो। कहां से भूत आता है, यह समझ में नहीं आता। और भूत सारे काम करता है।

इस तरह से अपनी रक्षा करने की बात है। और जब कभी भी आप बाहर जायें, कहीं भी घर से बाहर जायें तो अपने को पूर्णतया बन्धन में रखें। बन्धन में रखें, हर समय बन्धन रखें। देखा कि किसी का आज्ञा चक्र पकड़ा है, चित्त से ही चाहे बन्धन डाल दीजिये। जिस आदमी का आज्ञा चक्र पकड़ा है, उससे कभी भी argument (विवाद) नहीं करना चाहिये। यह तो बेवकूफी की बात है, जिसका आज्ञा चक्र पकड़ा है, तो क्या भूत से आप argument कर सकते हैं? उससे argument नहीं करना चाहिये जिसका भी आज्ञा चक्र पकड़ा है-पहली चीज।

जिसका विशुद्धि चक्र पकड़ा है, उससे भी argument नहीं करना चाहिये। जिसका सहस्रार पकड़ा है, उसके तो दरवाजे पर भी खड़ा नहीं होना चाहिये। उससे कोई मतलब ही नहीं होना चाहिये आपको। कह दो, "अपना सहस्रार ठीक करो भाई।"

उससे कहने में कोई हर्ज नहीं कि "तुम्हारा सहस्रार पकड़ा हुआ है, उसे ठीक करो।" सहस्रार साफ रखना चाहिये। अगर किसी को सहस्रार पकड़ा लगे तो फौरन जाकर कहना चाहिये कि, "मेरा सहस्रार उतार दो तुम लोग किसी तरह।" सहस्रार किसी का पकड़ा हो और वह आप से बातचीत करे कुछ, तो कहना चाहिये, "तू मेरा दुश्मन है।" उस आदमी से बिल्कुल उस वक्त तक बात नहीं करनी जब तक उसका सहस्रार पकड़ा है।

अब रही हृदय चक्र की बात। जिस मनुष्य का हृदय चक्र पकड़ा हैं उसकी मदद करनी चाहिये। जहां तक बन सके तो उसके हृदय पर बन्धन आदि डालना, अपने हृदय पर हाथ रखना, मां की फोटो की ओर उसको ले जाना। हृदय चक्र का ख्याल तो जरूर रखना चाहिये, क्योंकि कभी-कभी हृदय चक्र में हो सकता है दूसरे को जरा परेशानी हो। हृदय चक्र में जरूर मदद करनी चाहिये। पर बहुत-से लोगों के हृदय नहीं होता। बहुत dry (शुष्क) personalities (व्यक्तित्व) होते हैं। ऐसे dry लोगों के लिए आप कुछ भी नहीं कर सकते। आप चाहें भी उनका कुछ ठीक करना, तो भी आप कुछ नहीं कर सकते। पर, वो अगर आपके पास आयें, और आपसे कुछ कहें तो पहले उनको कहना चाहिये कि "हठ योग छोड़िये, आप दुनिया भर के काम छोड़िये और थोड़ा प्यार करना सीखिये। पहले कुत्ते, बिल्लियों से प्यार करिये अगर इन्सान से नहीं होता, फिर इन्सान से प्यार करिये।" खुद भी सब से प्यार करिये, बच्चों से प्यार करिये, बच्चों से ज्यादती मत करिये। किसी से भी ज्यादती मत करिये। किसी के साथ भी आप दुष्टता मत करिये, किसी को, बच्चों को तो कभी मारना नहीं है। किसी भी सहजयोगी को अपने बच्चों को कभी हाथ से मारना नहीं है। हाथ नहीं उठना है, किसी को मारना नहीं है। किसी से भी क्रोध नहीं करना है। सहजयोगी को तो क्रोध करना ही नहीं है। उसको बुद्धिमानी से हर चीज को ऐसा सूझ-सुधार लेना चाहिए कि क्रोध न दीखे। उसे कभी भी क्रोध करना नहीं।

रोजमर्रा का जीवन सहजयोगी का कैसा होना चाहिये? उसकी भी आप प्रार्थना करें। उसका विचार समझ आ जाएगा। मैंने अनेक तरह से आपको बताया है।

उसी प्रकार से हमारी जो "अनन्त-जीवन" की जो संस्था है, उसके लिए आठ दस आदमी मिलकर के क्या करने का है उस पर विचार करें। आप सब लोग अपना सहयोग उसमें दें और सब मदद करें। अभी जिन लोगों ने अपने नाम हमारे पास दिये नहीं हैं, जिनके नाम लिखे नहीं हैं तो अपने पते प्रधान साहब के पास भेज दें और हम Quarterly एक शुरु करने वाले हैं, उसमें मेरे पत्रों, सन्देश, लेक्चर वो सब छपेंगे। इसके अलावा तुम लोग भी अगर अपने अनुभव कुछ लिखो तो वो अनुभव उसमें छापे जायेंगे। सारे all India के जितने भी अनुभव लोगों के आते हैं, वो हर बार उसमें थोड़े बहुत छापे जायेंगे। उसमें अपने अनुभव लिखते जायें। अगर आप लोग कोई अच्छा लेख सहजयोग पर लिखकर भेजें तो वो भी इसमें छाप दिया जायेगा। इस प्रकार एक यहां पर Quarterly ले रहे हैं, उसमें अंग्रेजी में कुछ छपा रहेगा, कुछ मराठी में, कुछ हिन्दी में और कुछ गुजराती में। इस प्रकार की Quarterly हम लिख रहे हैं। बन पड़े तो सब हिन्दी और मराठी और गुजराती, इस सभी का एक साथ शुरु करेंगे या फिर धीरे-धीरे करेंगे। सहजयोग में हर चीज धीरे-धीरे

होती है। उसको आप contribute करें। उसको जो कुछ भी पैसा देना है, दें और उसका जो कुछ भी लाभ आपको उठाना है, उठायें। उसमें प्रश्न करें और प्रश्न वहां पूछें, उसका जवाब मैं वहां एक साथ दूंगी। Quarterly पहले शुरु कर रहे हैं। फिर Monthly हो जायेगी। फिर हम लोग उसे Weekly कर लेंगे। फिर Daily भी हो सकेगी। अभी बहरहाल हम लोग Quarterly कर रहे हैं। और जो भी तुम लोगों का कोई प्रश्न हो, कोई तकलीफ हो, उसके बारे में आप एक चिट्ठी प्रधान साहब के पास भेज दें। मुझे ज्यादा चिट्ठी नहीं दें। मेरे पास time बहुत कम है और फिर माँ ने चिट्ठी नहीं लिखी, एक को चिट्ठी लिखी "मला लिहिली त्यानां नाहीं लिहिली (मुझको लिखी, उनको नहीं लिखी)", इस तरह की कोई भी उल्लूपने की बात जो आदमी करता है, ऐसे आदमी के लिये सहजयोग नहीं है।

आपको पता होना चाहिये कि माँ सबको एक जैसा ही प्यार करती है। किसी कारण से नहीं लिखती है। कभी तुमको लिखा, कभी नहीं लिखा। कभी-कभी तो उनको नहीं लिखती हूँ जिनको मैं अत्यन्त सोचती हूँ कि वो बुरा नहीं मानेंगे। और बुरा मानने वाले लोगों की अब मैं परवाह नहीं करने वाली। मैंने बहुत परवाह कर ली और उससे लाभ यह हुआ कि वो दुष्ट तो दुष्ट ही रहे, वो ठीक नहीं हुए, हमें ही नुकसान होता रहा। जिस पर भी मैंने सोचा कि इस आदमी से ठीक से रहती रहूँ, चलिये कल ठीक हो जायेगा, पर नहीं, वो दुष्ट ही बने रहे। वो तो जरा भी अपना transformation (परिवर्तन) नहीं किया। तकलीफ हमें ही होती रही, क्योंकि मैंने तय कर लिया है कि किसी भी मनुष्य का संहार नहीं होगा, किसी भी मनुष्य को मैं यातना नहीं दूंगी। उसको full freedom (पूर्ण स्वतन्त्रता) है, चाहे तो वो Hell (नर्क) में जाए, जहन्नुम में जाए और चाहे तो वो परमात्मा के पास जाए। पूर्ण freedom मैंने आपको दे रखी है। जिसे चाहे नरक में उतरे, तो मैं कहती हूँ कि भैया दो कदम और जल्दी उतर जाओ, जिससे हमारा छुटकारा हो सके। यह भी व्यवस्था मैं कर दूंगी। **अगर आपको नरक में जाना है, तो भी व्यवस्था हो सकती है और अगर आपको परमात्मा के चरणों में उतरना है, वो भी व्यवस्था हो सकती है।** इसलिये जो लोग मुझे परेशान करते हैं और तंग करते हैं, मुझे बहुत जिन्होंने सताया है, ऐसे सब लोगों से मेरा कहना है कि मैंने बहुत patiently (धैर्य से) सबसे deal (व्यवहार) किया है और अब अगर किसी ने मुझे सताया है और तकलीफ दी तो मैं उससे कह दूंगी कि अब आपका हमारा सम्बन्ध नहीं है, आप यहां से चले जाइये। फिर वो दो चार लात मारते हैं, इधर-उधर निकलते वक्त में हरेक अपने गुण दिखाते रहते हैं। उनके सबके गुण दिखते हैं, लेकिन जो भी है, आपको यह चाहिये कि आप अपना भला सोचें। वो अगर नरक की ओर जा रहे हैं, तो आपको उनकी गाड़ी में बैठने की कोई जरूरत नहीं है। होंगे; "आपके लिये सहजयोग नहीं है" और छोड़िये उनको। अपना भला करें। किसी से भी वादविवाद करने की जरूरत नहीं है। जो जैसा है वैसा ही रहेगा। बहुत मुश्किल से बदलेंगे वो लोग, क्योंकि वो दुष्ट हैं। जो अच्छे आदमी होते हैं वो गलती करते हैं पर जल्दी समझ जाते हैं। जो बुरे आदमी होते हैं उन का बदलना असम्भव-सी बात है, यह मैं समझ गई हूँ। मैंने बहुत कोशिशें की हैं। मैंने बहुत कुछ किया है, लेकिन जो जैसा है, वैसा ही है।

उसको आप बदल ही नहीं सकते। उसको अक्ल ही नहीं आने वाली। इसलिये ऐसे लोगों से भिड़ने या बोलने की जरूरत नहीं और इस वजह से आप से मुझे यह विनती, कहना है कि आप लोग किसी प्रकार के ऐसे लोगों से कोई भी सम्बन्ध न रखें। धीरे-धीरे यह सब आप छट जायेंगे। क्योंकि वो यहाँ पर इसलिये हैं कि आपकी जो भी साधना है उसको नष्ट करें। ऐसे लोगों से बचकर रहें, उनसे रक्षा करें। अपनी रक्षा उनसे करें। आप सहजयोग में वाइब्रेशन (चैतन्य लहरियाँ) पायें।

एक साहब अभी मकान हमें दे रहे थे। उनके पास मैं गई। उनको हमने पार कर दिया। पार होने के बाद उनके पास एक साहब गये ऐसे ही। उन्होंने जाके बताया कि ये माताजी के ध्यान में तो बदमाश लोग हैं और ऐसा है, वैसा है। अब इनको मैंने पार कर दिया है, वाइब्रेशन आ गये। पर उस पर विश्वास कर लिया। तो उन्होंने कहा कि "माताजी, हम आपको घर नहीं दे सकते, क्यों कि हमको एक साहब ने कहा है।" तो मैंने कहा "उनको ही घर दे दो।" रोज फोन करता है, रोज फोन करता है कि 'माताजी खरीद लो, मुझसे गलती हो गई' मैंने कहा,"देखो, अब तो उसी को ही बेचो। पूरी freedom (स्वतन्त्रता) है।" बेचारा अब वह रो रहा है कि 'माताजी मुझ से नाराज हैं।' मैंने कहा,"मैं नाराज-वाराज नहीं, अब तुम उसको बेचो जिसने आकर तुम्हें पढ़ाया था।"

इसलिये, ऐसे जो अक्लमन्द लोग हैं, उनके लिए बेहतर है कि अपने को अगर नरक में जाना है तो सीधे टिकट कटाकर चले जायें, मैं आपको टिकट नरक का भी दे सकती हूँ। सब मेरे ही हिसाब किताब हैं। जिसको भी ऐसी इच्छा है नरक में जाने की मुझसे टिकट ले ले, मैं देने को तैयार हूँ और जिसको परमात्मा के राज्य में आना है, उसका टिकट भी मैं दे सकती हूँ। टिकट बाबू तो हर एक जगह का टिकट दे ही सकता है। लेकिन टिकट बाबू ये तो बतायेगा कि "भाई, एक तरफ तुम गये तो वहाँ derailment हो रहा है (गाड़ी पटरी से उतरी है) और वहाँ जाते ही तुम्हारी गाड़ी जो है, टूट जायेगी। फिर there is no return from there (वहाँ से आप वापस आ नहीं सकते)। Return ticket (वापसी टिकट) नहीं है। तो, इसलिये मैं यह जरूर बता रही थी-नरक के बारे में मुझे ज्यादा बताना नहीं है, नरक तो आप खुद ही जानते हैं क्या चीज है।

इसलिये मैंने आपको हिसाब किताब बताया है कि चीज अपनी साफ रखो और रास्ता अपना ऊपर का देखो, नीचे नहीं। ऊपर नजर रखोगे तो ऊपर चढ़ोगे। नीचे नहीं देखो। ऊपर चढ़ना है, ऊपर जाना है। और हर कदम, हर जगह आपके साथ हम खड़े हैं। हर जगह। कहीं पर भी आप रहें। कहीं पर भी रहो, हर जगह हम आपके साथ हैं-'काया, मन, वाचा'-पूर्णतया। यह हमारा promise (वचन) है। लेकिन जिस को नरक में जाना है, उसको भी हम खींच रहे हैं नीचे की तरफ। इसलिये बचकर रहो और ऊपर का रास्ता देखो, नीचे का नहीं।

अब मैं जा रही हूँ लन्दन। आने के बाद देखूं कि हर एक आदमी कम से कम दस लोगों को पार करे। आप में से बहुत से ऐसे हैं। औरों को बुलाए, उनसे खुले आम बातचीत करे, शर्मायें नहीं। सहजयोग के बारे में बताए कि यह चीज़ कितनी सत्य है, इसमें कितना सत्य-धर्म है, इसमें कितनी वास्तविक चीज है। और लोगों को इकट्ठा करें, जहां-जहां

मिलें उनसे बातचीत करें। फोटो सब लोग लें और दस-दस फोटो हर एक आदमी दस घर पहुँचाये। यह ही बड़ा अच्छा तरीका है कि हर एक आदमी contribute करके दस फोटो खरीदे और दस फोटो दस घर में पहुंचाये-ऐसे घर में जहां पर कि फोटो के प्रति श्रद्धा हो, जहां पूजा हो सके, जहां लोग सहजयोग को मान सकें। इस प्रकार से करने से ही सहजयोग फैल सकता है। असल में हम बहुत ज्यादा publicity (प्रचार) नहीं करना चाहते क्योंकि जब भी publicity करती हूँ तो गन्दे लोग आकर जल्दी चिपक जाते हैं। और जो अच्छे लोग होते हैं वो मिलते ही नहीं। इसलिये बेहतर यह है कि इसी तरह से आप लोग सहजयोग की पूरी तरह से सेवा करें और उसके द्वारा अपने को सम्पत्तिशाली करें।

परमात्मा आप सबको सुखी रखें। मेरा पूर्ण आशीर्वाद आपके साथ है। मेरा हृदय, मन, शरीर हर समय आप ही की सेवा में संलग्न है। वो एक पल भी आप से दूर नहीं। जब भी आप मुझे सिर्फ आँख बन्द करके याद कर लें उसी वक्त मैं पूर्णशक्ति लेकर के "शंख, चक्र, गदा, पद्म, गरुड़ लई धाये", एक क्षण भी विलम्ब नहीं लगेगा। लेकिन आपको मेरा होना पड़ेगा। ये जरूरी है। अगर आप मेरे हैं तो एक क्षण भी मुझे नहीं लगेगा, मैं आपके पास आ जाऊँगी।

सबको परमात्मा सुखी रखे और सुबुद्धि दे। सम्मति से रहो। सम्मति से रहो॥

सत्-चित्त-आनन्द

परम पूज्य माताजी श्री निर्मला देवी का प्रवचन

नई दिल्ली, 15 फरवरी 1977

क्या सभी लोग मेरी हिन्दी समझ सकते हैं? यदि मैं अंग्रेजी में बोलूं तो क्या आप लोग समझ पायेंगे? मैं अंग्रेज़ी के विरुद्ध नहीं हूँ, परन्तु आत्मा की भाषा तो संस्कृत है। इन लोगों ने (अंग्रेज़) कभी आत्मा की चिन्ता नहीं की। अतः हमें किसी ऐसी भाषा का उपयोग करना होगा जो आत्मा के विषय में बता सके, अंग्रेज़ी भाषा काफी नहीं है। उनके पास वो अनुभव नहीं है क्योंकि वो अब तक कभी गहनता में गए ही नहीं। हम लोग अत्यन्त प्राचीन हैं। परमात्मा को जानना हमारी संस्कृति रही है। सभी कुछ संस्कृत में आया। क्योंकि कुण्डलिनी चलती है तो चैतन्य लहरियों का सृजन करती है। कुण्डलिनी विशेष प्रकार के स्वरों का सृजन करती है जो कि भिन्न चक्रों पर देवनागरी स्वर होते हैं। कभी यदि मुझे समय मिला तो मैं आपको इनके विषय में बताऊंगी। आप जब संस्कृत भाषा या देवनागरी में मन्त्रोच्चारण करते हैं केवल तभी इन्हें बेहतर रूप से जागृत कर सकते हैं। चाहे आप संस्कृत न सीखें परन्तु हिन्दी सीखने का प्रयत्न अवश्य करें क्योंकि स्वर विज्ञान सम्पन्न होने के कारण इसमें स्वर हैं और स्वरों का चैतन्य प्रदायक प्रभाव होता है। इस भाषा को सीखने का प्रयत्न करें। हिन्दी मेरी मातृभाषा नहीं है, मेरी मातृभाषा तो मराठी है। मैं हिन्दी बोलती हूँ क्योंकि मैं इसके महत्व को जानती हूँ। मुझे थोड़ी सी अंग्रेज़ी भी आती है। अतः बेहतर होगा कि आप लोग कम से कम हिन्दी तो सीख लें। कहने से मेरा अभिप्राय यह है कि बोलने के हिसाब से मराठी मेरे लिए उपयुक्त है, बंगाली मुझे थोड़ी बहुत आती है। तमिल, तेलगु या इस योग भूमि की किसी अन्य भाषा में आप इसके विषय में बात कर सकते हैं। यह योग का महान देश है। आप को आश्चर्य होगा कि इस भूमि का ज़र्रा-ज़र्रा चैतन्य से परिपूर्ण है। जब हम पश्चिमी देशों की बातों को स्वीकार करने लगेंगे तो अपना सभी कुछ, जो कि इतना महान है, खो देंगे। निःसन्देह यह समाप्त तो नहीं होगा परन्तु अपने लक्ष्य के लिए हम इसका उपयोग भी न कर पायेंगे। एक ओर तो हमें उस सारे ज्ञान की अवज्ञा करनी पड़ती है और दूसरी ओर विदेशी बाह्य चीज़ों की जो कि सारगर्भित भी नहीं है। उनका ज्ञान समग्र नहीं है। इसमें सभी कुछ समाहित नहीं है। अतः मैं आपसे अनुरोध करूंगी कि थोड़ी सी हिन्दी भाषा भी सीखें। मेरे एक अंग्रेजी प्रवचन का मराठी में अनुवाद किया गया है। और यह कितनी जबरदस्त चीज़ थी! और अंग्रेजी में यह इतना घटिया था! हो सकता है मेरी अंग्रेजी बहुत कमज़ोर हो, हो सकता है!

हम सत्-चित्त-आनन्द की बात कर रहे थे। एक बार फिर मुझे संस्कृत शब्द उपयोग करने पड़ रहे हैं। सत्-चित्त-आनन्द पराचेतना है – सर्वव्याप्त शक्ति। चित्त चेतना है। इस क्षण आप लोग चेतन हैं और मुझे सुन रहे हैं। हर क्षण आप लोग चेतन हैं परन्तु यह क्षण मृत हो कर भूत बनता जा रहा है। हर क्षण भविष्य से वर्तमान की ओर आ रहा है। इस क्षण आप लोग चेतन हैं और मुझे सुन रहे हैं। विचार उठता है और फिर इसका पतन होता है। विचार को उठते हुए आप देख सकते हैं परन्तु इसको गिरते हुए आप नहीं देख सकते। इन विचारों के बीच की दूरी 'विलम्ब' कहलाती है। कुछ समय के लिए

यदि आप रुक सकें (विचारों को रोक सकें) तो आप चेतन मस्तिष्क को पहुँच जाते हैं और वहीं सत्-चित्त-आनन्द का अस्तित्व है। **आप कह सकते हैं कि सत्-चित्त-आनन्द मस्तिष्क की एक दशा है या मस्तिष्क की वह अवस्था है जहां कोई विचार नहीं होता, फिर भी आप चेतन, निर्विचार होते हैं। यह प्रथम अवस्था है जिसमें आप जाते हैं, पराचेतन अवस्था में।**

कुछ लोग सोच सकते हैं कि आत्म-साक्षात्कार द्वारा व्यक्ति को ऐसी अवस्था प्राप्त हो जानी चाहिए जो आदिशंकराचार्य को प्राप्त हुई थी। परन्तु यह सम्भव नहीं है। कुछ साधकों के साथ ऐसा हो सकता है परन्तु सब के साथ ऐसा होना असम्भव है। निर्विचार होना आपकी प्रथम अवस्था है। आप निर्विचार चेतना में चले जाते हैं। ऐसा तभी घटित होता है जब आप आज्ञा चक्र से उपर चले जाते हैं अर्थात् मस्तिष्क क्षेत्र में प्रवेश करते हैं। जब आपका चित् 'सत्' (सत्य) बिन्दु को छू लेता है तब वास्तविकता मिथ्या से अलग हो जाती है। आप का व्यक्तित्व दोहरा हो जाता है। इस अवस्था में आप अलग होने लगते हैं। इसी प्रकार से वास्तविकता का आरम्भ होता है। यह वो अवस्था है जब आप कह सकते हैं कि कुण्डलिनी केवल जागृत हुई है। भिन्न अवस्थाएं जिस प्रकार से घटित होती हैं उनको समझना हमारे लिए आवश्यक है। मैं अत्यन्त विस्तृत तस्वीर आप के सम्मुख रख रही हूँ परन्तु सामान्यत: अधिकतर लोगों की कुण्डलिनी एक दम से सहस्रार पर चली जाती है, कुछ लोगों में यह नहीं भी जाती, समय लेती है। या तो यह स्वाधिष्ठान में रुक जाती है या नाभी पर, अधिक ऊपर नहीं जाती। कई बार ये अनहद् चक्र में फंस जाती है और ऐसा भी हो सकता है कि कुण्डलिनी बिल्कुल उठे ही नहीं। परन्तु जिन साधकों में कुण्डलिनी आज्ञा चक्र द्वार पार कर लेती है तो व्यक्ति निर्विचार समाधि की अवस्था में चला जाता है। निर्विचार चेतना की इस अवस्था से आपको कुछ शक्तियाँ प्राप्त हो जाती हैं। उदाहरण के लिए मान लो आप गवर्नर बन गए, गवर्नर की कुछ शक्तियाँ आपको मिल जाती हैं। इसी प्रकार से आपको भी कुछ शक्तियाँ प्राप्त हो जाती हैं। परन्तु इस अवस्था में कुण्डलिनी को छोड़ देना ठीक नहीं है क्योंकि कुण्डलिनी एक ओर को या दूसरी ओर को (बाएं या दाएं) जा सकती है और इस प्रकार से अतिचेतन (Supra-conscious) में या सामूहिक अवचेतन (Collective-sub conscious) में प्रवेश कर सकती है। ये वो अवस्था है जिसमें प्राय: सिद्धियाँ प्राप्त होती हैं। छोटी-मोटी सिद्धियाँ नहीं, उच्च कोटि की सिद्धियाँ।

उदाहरण के रूप में, कुण्डलिनी यदि अतिचेतन में चली जाए तो व्यक्ति को भविष्यवाणियाँ करने की सिद्धि मिल जाती है। कुण्डलिनी यदि सामूहिक अवचेतन में चली जाए तो बीते हुए समय को ऐसा व्यक्ति देखने लगता है। ऐसा व्यक्ति जब मेरे पास आता है तो वह देख पाता है कि अपने पूर्व जन्मों में मैं कौन थी, उन्हें कायल नहीं करना पड़ता। यह भूत-बाधित होने जैसा ही है। नशाखोर तथा शराबी व्यक्ति यदि भला है और अब भी परमात्मा को खोज रहा है तो वह मुझे भिन्न रूपों में देखता है। वह मेरा भूतकाल देख सकता है और मुझसे बहुत ही प्रभावित हो सकता है। वह जान जाएगा कि मैं कौन थी। लोग सोचते हैं कि भूतकाल हमेशा वर्तमान से महान होता है क्योंकि भूतकाल आज की अपेक्षा कहीं महान है, यद्यपि इससे पूर्व मैंने कभी किसी

को आत्मसाक्षात्कार नहीं दिया। इस प्रकार की चीजें जब वह देखता है तब वह मेरे प्रति आकर्षित हो जाता है। ऐसा उन लोगों के साथ होता है जो अतिचेतन की अवस्था में होते हैं और उनका झुकाव बाईं ओर को होता है अर्थात् भूतकाल की ओर। जो लोग आक्रामक प्रवृत्ति के होते हैं (दाईं ओर के) वे मुझे प्रकाश के रूप में देख सकते हैं। पाँचों तत्व उन्हें दिखाई देते हैं। झरने या हिमशैल (Iceberg) के रूप में वो मुझे देखते हैं। वे तन्मात्रा अर्थात् पँच-तत्वों के कारणात्मक सार को देखने लगते हैं। ऐसा होने पर वे कायल हो जाते हैं क्योंकि ऐसा व्यक्ति मेरे विषय में जब विश्वस्त हो जाता है तो उसका विश्वास आप लोगों की अपेक्षा कहीं अधिक होता है। बहुत से तान्त्रिक जानते हैं कि मैं कौन हूँ। वो मुझसे डरते हैं और मेरे विषय में बात नहीं करते हैं। एक साधारण नौकरानी मेरे कार्यक्रम में आई, उसको दौरा आया और वह संस्कृत बोलने लगी तथा पन्द्रह श्लोकों में मेरा पूरा वर्णन किया। पहली बार किसी ने मेरे बारे में इस तरह वर्णन किया था क्योंकि इससे पूर्व मैंने कभी अपने विषय में कुछ नहीं कहा था। और इस प्रकार इसका आरम्भ हुआ।

अत: इस स्थिति में आपकी कुण्डलिनी को छोड़ना मुझे अच्छा नहीं लगेगा क्योंकि आप, लोगों को रोगमुक्त कर सकते हैं तथा रोग ठीक करने का कार्य तब भी हो सकता है जब आपकी कुण्डलिनी मस्तिष्क क्षेत्र के अन्दर हो। सदैव मेरी यह इच्छा होती है कि कुण्डलिनी ब्रह्मरन्ध्र से बाहर आए। उस अवस्था में आपको चैतन्य लहरियाँ आने लगती हैं। परन्तु इस अवस्था में (कुण्डलिनी का मस्तिष्क क्षेत्र में होना) आप 'चित्त' मात्र होते हैं, आप केवल 'सत्' बिन्दु को छू पाते हैं। केवल आपका चित्त आत्मा की ओर आकर्षित होता है। चित्त, जैसा मैंने आपको बताया है, गैस के दीपक में टिमटिमाते प्रकाश की तरह होता है और कुण्डलिनी उसमें गैस है जो आत्मा को छू लेती है तथा आत्मा का प्रकाश मध्य नाड़ी तन्त्र पर फैल जाता है। बाह्य आवरण में चित्त का अर्थ है ध्यान-तत्व (attention part)। इस स्थिति में कुण्डलिनी ब्रह्मरन्ध्र को खोलती है और आप अपने हाथों पर चैतन्य लहरियाँ महसूस करते हैं तथा अन्य लोगों की चैतन्य लहरियां भी महसूस कर सकते हैं क्योंकि अब आप 'सामूहिक-चेतन' (collective conscious) हो जाते हैं। सत्-चित्त-आनन्द में से अभी भी आप 'चित्त' मात्र को छू पाते हैं। इस प्रकार आप चित्त भाग को महसूस करने लगते हैं जो कि अब सामूहिक चेतन होने लगता है अर्थात-आप सत्-चित्त-आनन्द रूपी सागर में गिर जाते हैं जहाँ आपको केवल सामूहिक-चेतना महसूस होती है। इसका अर्थ यह है कि आप अन्य लोगों की कुण्डलिनी को महसूस कर सकते हैं।

कल एक अन्य व्यक्ति आया था, आपने देखा, वह मुझसे बहस कर रहा था कि हमारे अन्दर स्थगित बुद्धि (Suspended Intelligence) होती है, परन्तु मैंने केवल इतना पूछा,"कि यह स्थगित बुद्धि क्या है? मुझे इसका ज्ञान नहीं है।" तब मैंने उसे बताया। वह कहने लगा,"मैं तुर्यावस्था में हूँ।" मैंने कहा,"आप यदि तुर्या-अवस्था में हैं तो आप अन्य व्यक्ति की कुण्डलिनी को महसूस कर सकते हैं, बिना इसके आप स्वयं को प्रमाण पत्र नहीं दे सकते। परन्तु क्या आप दूसरे व्यक्ति की कुण्डलिनी को महसूस कर सकते हैं?" कहने लगा 'नहीं'। तब मैंने उससे पूछा,"तो किस प्रकार आप तुर्या में हो

सकते हैं?" तुर्या में जब आप जाते हैं अर्थात इस स्तर से जब आप पार होते हैं तब आपको दूसरे व्यक्ति की कुण्डलिनी की जानकारी हो जानी चाहिए। अब आपने देखा है कि यहाँ पर बहुत से लोग हैं। बहुत से लोग हैं जो दूसरों की कुण्डलिनी को महसूस कर सकते हैं और वो सभी एक ही बात कहते हैं तथा एक ही भाषा बोलते हैं चाहे वह अंग्रेजी में, हिन्दी में या किसी अन्य भाषा में बोलें। वे एक ही चीज कहते हैं-यह चक्र पकड़ रहा है, वह चक्र पकड़ रहा है। ऐसा इसलिए होता है क्योंकि आप अपनी कुण्डलिनी को देखने लगते हैं और उसके द्वारा अन्य लोगों की कुण्डलिनी को भी। अपनी अंगुलियों पर आप महसूस कर सकते हैं कि क्या घटित हो रहा है। आप केवल 'चित्त' को महसूस करते हैं, इसके 'आनन्द' को नहीं। पहली अवस्था में चित्त के द्वारा दूसरे व्यक्ति की कुण्डलिनी को महसूस करना तथा दूसरे व्यक्ति की कुण्डलिनी को उठाना है। कुछ समय पश्चात् मेरे फोटो की सहायता से आप किसी भी साधक को आत्मसाक्षात्कार दे सकते हैं। परन्तु अभी भी आप 'आनन्द' की स्थिति तक नहीं पहुँचे। आरम्भ में आप केवल अपने हाथों पर शीतल लहरियाँ महसूस करते हैं। आपको शान्ति का अहसास होता है और आप निर्विचार होते हैं। 'निर्विचार चेतना' को आप महसूस करते हैं परन्तु इस अवस्था में भी अभी 'आनन्द' की अनुभूति नहीं हुई। मैंने हजारों मनुष्यों और उनकी समस्याओं का अध्ययन किया है और जानती हूँ कि वास्तविकता क्या है। परन्तु कुछ ऐसे लोग भी हैं, यद्यपि वो बहुत कम हैं, जो अन्तिम अवस्था तक पहुँच गए हैं। इस प्रकार प्रथम अवस्था पर जब आप आते हैं तो यह चित्त की अवस्था होती है, चेतना की अवस्था। आप 'सत्' को छू लेते हैं अर्थात आप वास्तविकता को देखने लगते हैं यद्यपि चैतन्य के प्रवाह को आप महसूस करने लगते हैं। इस समय आप कहने लगते हैं कि यह आ रहा है, यह जा रहा है। अभी-अभी आपने कहा था कि यह आ रहा है, आपने यह नहीं कहा कि मैं इसे प्राप्त कर रहा हूँ, मैं दे रहा हूँ। आपकी भाषा से 'मैं' चला जाता है। परन्तु अब भी अहं (Ego) और प्रतिअहं (Superego) पूर्णतः सन्तुलित नहीं हुए। वो अब भी बने हुए हैं परन्तु आपका चित्त उन्नत हुआ है और इसे आप महसूस कर सकते हैं। इस सामूहिक चेतना से आप लोगों को रोगमुक्त कर सकते हैं और उन्हें आत्मसाक्षात्कार दे सकते हैं। और जैसा मैंने आपको बताया विश्व में कहीं पर भी विद्यमान किसी भी व्यक्ति की कुण्डलिनी को महसूस कर सकते हैं और उसके चक्रों को ठीक कर सकते हैं। यहीं पर बैठे हुए आप दूसरे व्यक्ति की स्थिति के विषय में बता सकते हैं। आपका चित्त जहाँ भी जाता है, कार्य करता है, और इस प्रकार आपका चित्त ब्रह्माण्डीय (universal) हो जाता है। आपके चित्त रूपी बूंद 'सत्-चित्त-आनन्द' रूपी सागर से एकरूप हो जाती है।

मेरी बात को बहुत ध्यानपूर्वक सुनें क्योंकि इस अवस्था में बहुत से लोग बेध्याने हो जाते हैं और प्रभावशाली तो केवल चित्त ही होता है। मैं आपको अपने एक शिष्य के बारे में बताऊंगी जो यहाँ पर इंग्लैंड से आया था। एक दिन बैठा हुआ वह अपने पिताजी के बारे में सोच रहा था, अचानक उसकी तर्जनी (Index) ऊंगली पर जलन हुई। उसने अपने पिताजी को फोन किया तो उसकी माँ ने बताया कि उसके पिताजी का स्वास्थ्य ठीक न था।

उसे गले का रोग था। इस लड़के ने अपनी अंगुली पर कुछ किया और उसके पिता ठीक हो गए। अब वह सोच सकता है कि वह शक्तिशाली है, आदि-आदि। परन्तु बात यह नहीं है। इस प्रकार से वह नहीं सोच सकता क्योंकि उसका सहस्रार खुल चुका है। उसने केवल इतना कहा, "श्रीमाताजी, मैंने ऐसा महसूस किया और इस प्रकार किया, तथा मेरे पिताजी ठीक हो गए।" व्यक्ति ऐसा कभी नहीं कहता कि 'मैंने' यह किया। 'मैं' चली जाती है। आप कभी नहीं कहते 'मैंने' यह कार्य किया परन्तु आप कहेंगे,"श्रीमाताजी, आज मेरी आज्ञा पकड़ रही है," "श्रीमाताजी, मेरा हृदय पकड़ रहा है।" ये लोग आ कर अपने विषय में इस प्रकार से बात करते हैं। आज्ञा पकड़ने का अर्थ यह है कि आप पगला जाएंगे। परन्तु व्यक्ति को यह बात बुरी नहीं लगती क्योंकि वह इससे लिप्त नहीं है। वह अपनी आत्मा से जुड़ा हुआ है। अतः आत्म-रूप में वह कहता है कि यह चक्र पकड़ा हुआ है, वह चक्र पकड़ा हुआ है। कर्क रोग (Cancer) से पीड़ित व्यक्ति को इसका पता नहीं होता परन्तु आत्मसाक्षात्कारी व्यक्ति का चित्त उसे बता देगा कि फलां-फलां चक्रों की स्थिति ठीक नहीं है और इतने चक्रों की स्थिति के ठीक ना होने का अर्थ है - कर्क रोग। उसे चिकित्सक के पास नहीं जाना पड़ता, वह स्वयं रोग निदान (Diagnose) कर सकता है। चिकित्सक की तरह से वह निदान करके यह नहीं कहेगा कि आपको हृदय का कैंसर है या गले का, वह कहेगा कि आपके चक्र पकड़े हुए हैं, बाईं ओर के, या दाईं ओर के।

चैतन्य लहरियाँ कहाँ से आ रही हैं, कहाँ तक यह पहुँच रही है और ऐसे चक्रों की गहन समझ प्रदान कर रही हैं? बहुत सी अप्रत्यक्ष महत्वपूर्ण घटनाएँ घटित हो रही हैं।

एक बार जब आपको आत्मसाक्षात्कार प्राप्त हो जाता है तो 'चिरंजीवी' (Deities) आपके सम्मुख समर्पित हो जाते हैं। वे आपको देखते हैं। अब आप उनकी जिम्मेदारी हैं। आपके अन्दर सभी देवी-देवता जागृत हो गए हैं। देवी-देवताओं के विरुद्ध यदि आप कोई कार्य करते हैं तो वे तुरन्त आपको हानि पहुँचाएंगे। कोई साक्षात्कारी व्यक्ति यदि किसी ऐसे स्थान पर जाता है जो देखने योग्य नहीं है, महसूस करने योग्य नहीं है या जो अच्छा स्थान नहीं है, या यदि वह किसी कुगुरु के पास जाता है तो तुरन्त उसे गर्मी महसूस होने लगेगी। फिर भी यदि वह वहाँ से भाग नहीं निकलता, यदि वह वहाँ जाता रहता है तो उसकी चैतन्य लहरियाँ समाप्त हो जाएंगी और वह किसी भी अन्य सर्वसाधारण व्यक्ति की तरह से हो जाएगा।

आरम्भ में यह अत्यन्त अस्थायी स्थिति में होता है। यहाँ पर मैं यह कहूँगी कि अभी भी अरुचि इतनी अधिक नहीं होती कि व्यक्ति इसे स्वीकार न करे। क्योंकि यदि इसे आप स्वीकार कर लें तो आप पूर्णतया आत्मसाक्षात्कारी हो जाते हैं। यदि आप इसे स्वीकार नहीं करते तो आपको थोड़ी सी शारीरिक समस्या हो सकती है। हो सकता है कि आप अपनी अंगुलियों को हानि पहुंचा लें या यहाँ-वहाँ कहीं आपको जलन हो जाए। परन्तु यदि आपको इन शारीरिक संवेदनाओं का भय न होगा और आप इनकी चिन्ता छोड़ देंगे तो आप ऊँचे उठने लगेंगे। मैंने आपको पहले ही बताया है कि 'चिरंजीवी' आपका पथ-प्रदर्शन और आपकी देखभाल करने लगते हैं। रेलगाड़ी में यदि एक भी आत्मसाक्षात्कारी

व्यक्ति हो तो यह दुर्घटनाग्रस्त नहीं हो सकती और यदि दुर्घटना हो भी जाए तो इसमें किसी की मृत्यु नहीं होगी। कोई आत्मसाक्षात्कारी यदि सड़क पर चल रहा हो और घटित होने वाली कोई दुर्घटना उसे दिखाई दे तो तुरन्त उसका चित्त वहाँ चला जाता है और दुर्घटना टल जाती है। उसका चित्त आशीर्वादित है, यह बात किसी वैज्ञानिक को समझ नहीं आ सकती। अभी-अभी मुझसे किसी ने पूछा था कि,"अन्त: स्थित परमात्मा यदि उसका पथ-प्रदर्शन कर रहे हैं तो वह स्वयं तो कुछ भी नहीं कर सकता।" ऐसा नहीं है। अन्त: स्थित देवी-देवता तो उसी के अंग-प्रत्यंग हैं। आप कह सकते हैं कि मस्तिष्क मेरा पथ-प्रदर्शन कर रहा है इसलिए मैं कुछ अन्य नहीं कर सकता। आप स्वयं देख सकते हैं कि देवी-देवता तो आपके आन्तरिक हिस्से हैं। तब आत्मा के साथ क्या है? जब आप आत्मा (Self) से एकरूप हो जाते हैं तब आप निर्लिप्त व्यक्तित्व हो जाते हैं, तब आपमें 'स्व' ('I'ness) की भावना नहीं रहती। हर समय आप कहते हैं,"यह हो रहा है, यह घटित हो रहा है, यह बह रहा है।" स्वयं को आप तृतीय पुरुष (third person) की तरह से देखने लगते हैं। स्वयं को आप 'मैं' से नहीं जोड़ते, ऐसा होता है। आप देख सकते हैं कि यह लोग किस प्रकार से कार्य करते हैं।

आनन्द (joy) की भी एक भूमिका है। प्राय: आप देखते हैं कि कोई व्यक्ति यदि आत्मसाक्षात्कारी है और टेढ़ा नहीं है तो उसके इर्द गिर्द बहुत से सहजयोगी एकत्र हो जाते हैं। कोई साधक यदि महान आत्मा है और वो यदि मेरे चरणों पर प्रणाम करता है तो अन्य सहजयोगी उसका बहुत आनन्द लेते हैं। एक बार हम कलकत्ता के एक होटल में ठहरे हुए थे, एक सज्जन व्यक्ति मुझसे मिलने के लिए आया। वह आत्मसाक्षात्कारी तो न था पर महान पूर्व सम्पदा सन्त था। उसने मेरे चरण स्पर्श किए। अन्य सहजयोगी दूसरे कमरों में थे सभी दौड़े चले आए। मैंने पूछा,"आप क्यों आए हैं?" उन्होंने उत्तर दिया हमारे अन्दर तेजी से चैतन्य बहने लगा, इसलिए हम यहां आए हैं।" वह व्यक्ति मेरे चरणों में था और बाकी सब लोग वहां ठहरे हुए थे। मैंने कहा,"न तो यह मुझे छोड़ रहा है और न आप लोग यहां से जा रहे हो।" 15 मिनट तक वह व्यक्ति मेरे चरणामृत का आनन्द लेता रहा और उससे प्रवाहित होने वाले अमृत तथा सुगन्ध का आनन्द वहां उपस्थित अन्य लोग लेते रहे।

अत: आप अन्य लोगों का आनन्द लेना भी शुरूकर देते हैं। इस प्रकार की भावनाएं होती हैं। इस प्रकार आप 'निर्विचारिता' या 'समाधि' का आनन्द लेते हैं। 'समाधि' का अर्थ 'अचेतन होना नहीं है, इस स्थिति में तो अचेतन भी चेतन हो जाता है। ब्रह्माण्डीय 'अचेतन' भी 'चेतन' हो जाता है। तो यह पहली अवस्था है। ऐसी बहुत सी अवस्थाएं हैं और बहुत सी चीजें घटित होती हैं। मान लो अपने पूर्व जन्म में आप काफी ज्योति-पूजा कर रहे थे तो आप मेरी चैतन्य लहरियों को आते जाते देख पायेंगे। यदि आप देवी-पूजा करते रहे हैं तो देवी-प्रणाम सा कुछ कर सकते हैं। उसे आप देख भी सकते हैं। आत्मसाक्षात्कार से पूर्व यदि आपको ऐसा कुछ नजर आता है तो इसका अर्थ ये है कि आप भूत-बाधित हैं और कोई आपको विचार भेज रहा है। परन्तु आत्मसाक्षात्कार के बाद यदि आप कुछ देखने लगते हैं तो इसका कुछ अर्थ है। इस प्रकार पुष्प का निरन्तर विकास प्रकट होने लगता है।

दूसरी अवस्था में आप 'निर्विकल्प' हो जाते हैं, जहां कोई विकल्प नहीं होता। आज दिल्ली में बहुत कम ऐसे सहजयोगी हैं। सर्वप्रथम तो स्वभाव से ही वो लोग विकल्पी हैं। इसका कारण ये है कि पूरा वातावरण ही विकल्प वाला है। आप यदि कुछ कहेंगे तो दूसरा व्यक्ति कुछ और कहकर आपको नीचे खींच लेगा। तो पूरा वातावरण ही इतना विकल्पी है कि अभी तक आप सहजयोग में स्थापित नहीं हो पाये हैं। परन्तु दिल्ली में भी हमारे पास बहुत से महान सहजयोगी हैं। आप पूछ सकते हैं कि 'निर्विकल्प' किस प्रकार हों? मान लो आप पानी में हैं और डूबने से भयभीत हैं। अत: आपको उठाकर नाव में डाल लिया जाता है। अब आपको डूबने का भय नहीं रह जाता तथा दृढ़ता पूर्वक अब आप स्थापित हो सकते हैं।

आपको दृढ़ता पूर्वक स्थापित होना होगा, तभी आप कुछ शक्तियाँ प्राप्त कर सकते हैं-आपकी कुण्डलिनी गतिमान होने लगती है। बम्बई में हमारे यहाँ ऐसे कुछ लोग हैं जिनकी कुण्डलिनी कम से कम एक फुट ऊँची निकलती है। वे अत्यन्त उन्नत लोग हैं। निर्विकल्प अवस्था में सामूहिक चेतना सूक्ष्मातिसूक्ष्म हो जाती है। उस अवस्था में, जब वास्तविकता स्पष्ट होने लगती है, तब आप गहन महत्व की चीज़ों को समझ सकते हैं। उदाहरण के रूप में आप कुण्डलिनी की कार्यशैली को समझने लगते हैं। आप समझ सकते हैं कि यह किस प्रकार भेदन करती है, किस प्रकार कार्यान्वयन करती है, अपने हाथों से आप इससे प्रयोग कर सकते हैं और इच्छानुसार इसे चला सकते हैं। आप लोगों को रोग मुक्त कर सकते हैं और भिन्न प्रकार से कुण्डलिनी की कार्यशैली को दर्शा सकते हैं। कुण्डलिनी के क्रम परिवर्तन को आप समझ सकते हैं। आप कह सकते हैं कि संगीत शिक्षा के प्रथम वर्ष में आप केवल सात स्वरों तथा अन्य स्वरों और साधारण राग सीख सकते हैं परन्तु जब आप सूक्ष्म एवं उन्नत हो जाते हैं तब संगीत रचना के सारे सूक्ष्म रहस्यों को जान जाते हैं।

निर्विकल्प अवस्था में किसी भी व्यक्ति की ओर हाथ करने की आवश्यकता नहीं होती, बैठने मात्र से ही आप जान जाते हैं कि वो कहाँ है और क्या घटित हो रहा है और कहाँ पकड़ रहा है, समस्या क्या है, सामूहिक समस्याएं क्या हैं? सहजयोग और कुण्डलिनी के विषय में आपको कोई संदेह नहीं रहता, संदेह बिल्कुल समाप्त हो जाते हैं तब आप इस पर प्रयोग करने लगते हैं और इसका उपयोग करते हैं। कुण्डलिनी पर स्वामित्व होने लगता है। इस अवस्था में 'चित्त'-चेतना सूक्ष्म हो जाती है। कोई व्यक्ति मेरे पास बैठा हुआ था और बाहर बैठे सहजयोगी जानते थे कि उस भद्र पुरुष को आत्म-साक्षात्कार मिलने वाला है। वे जानते थे कि श्रीमाताजी आत्मसाक्षात्कार देने वाली हैं। सहजयोगी ऐसे समय पर अत्यन्त प्रसन्न होते हैं तथा छोटी-छोटी चीजों के विषय में शिकवे नहीं करते। वे मस्त होते हैं और शान से रहते हैं। वे तुनकमिजाज नहीं होते उनका चित्त सूक्ष्म में होता है।

बाहर के दुनियावी मामलों के लिए उनके पास समय नहीं होता। यही कारण है कि उनका चित्त सदैव सूक्ष्म पर होता है। वो चिंतित नहीं होते, ऐसे लोग संतुष्ट आत्माएं होते हैं। यही लोग सहज के स्तम्भ बनेंगे। कोई जब ऐसे लोगों को देखता है, ऐसे परिवर्तित व्यक्ति को तो उन्हें चोट पहुँचती है। "इस व्यक्ति को देखो ये कितना महान है। पहले तो यह

बहुत खराब था किस प्रकार यह परिवर्तित हुआ है, देखो किस प्रकार इसका कायापलट हुआ है!" इस अवस्था में; निर्विकल्प अवस्था में चैतन्य लहरियाँ बहती हैं और बिल्कुल प्रश्न नहीं रह जाता। परन्तु ऐसा व्यक्ति यदि किसी को दुर्व्यवहार करता देख ले तो वह क्रोध से भर जाता है और इसे सहन नहीं कर पाता। ईसामसीह ने कहा है,"इन सबको क्षमा कर दो क्योंकि ये नहीं जानते कि ये क्या कर रहे हैं"। परन्तु मान लो कि उनकी (ईसामसीह) माँ की शान में कोई अपराध किया होता तो वो उन्हें बिल्कुल क्षमा न कर पाते। बाइबल में लिखा हुआ है कि आदिशक्ति (Holy Ghost) के विरुद्ध कुछ भी सहन नहीं किया जाएगा। और Holy Ghost उनकी माँ थी और वो आदिशक्ति हैं। इसलिए आप अपनी श्रीमाताजी और सहजयोग के विरुद्ध कुछ भी सहन नहीं कर सकते और आपको एकदम भयंकर क्रोध आता है। ऐसे लोगों में संहार शक्ति पनप जाती है। कहा जाता है कि ऐसे व्यक्ति को जब कोई हानि पहुँचाने का प्रयत्न करता है तो वह उसे माँ के प्रति अपनी भक्ति से धराशाही कर देता है। हमारी एक धारणा है कि आत्मसाक्षात्कारी लोगों को कभी क्रोधित नहीं होना चाहिए। यह बिल्कुल गलत धारणा है। तब आप कहेंगे," श्रीकृष्ण ने जरासंध का वध क्यों किया, कंस का वध क्यों किया। कृष्ण की हिंसा को आप कैसे उचित ठहराते हैं। देवी, जिन्होंने अवतरित होकर क्रोध में बेशुमार राक्षसों का वध किया उसका स्पष्टीकरण आप कैसे करते हैं। भयंकर क्रोध में आकर वे राक्षसों का वध किया करती थीं। शिव का क्रोध, उसका स्पष्टीकरण आप कैसे देते हैं? ये मूर्खतापूर्ण धारणा है कि उन्हें कभी क्रोधित नहीं होना चाहिए, चाहे कोई उनकी हत्या करने का ही प्रयत्न क्यों न करे। ईसामसीह को भी अपने हाथ में हंटर उठाकर लोगों को भगाना पड़ा। यदि आप निर्विकल्प अवस्था में हैं तो आपको क्रोध करने का अधिकार है क्योंकि आवश्यकता पड़ने पर आपको आवाज़ उठाने का अधिकार प्रदान किया गया है। मैं सारे आयुध उपयोग करती हूँ, ये सब आयुध होते हैं और मुझे उनका उपयोग करना पड़ता है, उनका उपयोग करने से आप मुझे रोक नहीं सकते। मैं यही बात कहती हूँ कि पढ़ने मात्र से लोग चीज़ों को समझ नहीं पाते। शांतिपूर्वक बैठा हुआ, सब लोगों द्वारा सताया जाने वाला व्यक्ति ही आत्मसाक्षात्कारी कहलाता है-ऐसा समझना निहायत मूर्खता है। किस प्रकार आप ऐसे व्यक्ति से ईर्ष्या करने का साहस कर सकते हैं। क्या आत्मसाक्षात्कारी व्यक्ति को देवी का द्वेष सहन करना होगा। ये कहना बिल्कुल गलत है कि आत्म-साक्षात्कारी व्यक्ति को कतई क्रोध नहीं करना चाहिए।

जिन ऋषियों के बारे में मैंने बताया है या वो सब जिन्होंने मेरे बारे में वर्णन किया है तथा जिनके नाम मैंने आपको बताए हैं, वे सब निर्विकल्प स्थिति से ऊपर थे। परन्तु वे भी उग्र स्वभाव के थे। ये सन्त पाखण्ड सहन नहीं कर सकते लेकिन मैं सहन कर सकती हूँ, मुझे सहन करना पड़ता है। कोई राक्षस उनके समीप नहीं फटक सकता और यदि कोई चला जाए तो वे उन्हें फंदा डालकर पेड़ से लटका देते हैं। इसीलिए मैं किसी बाबाजी के पास जाने के लिए कभी नहीं कहती। नि:संदेह वो बड़े ऊँचे लोग हैं आप लोगों से बेहतर हैं। मुझे भली-भाति जानते हैं और मेरे चरण कमलों में नतमस्तक होते हैं। मेरे लिए वे बच्चों की तरह से अबोध हैं और सहज हैं। श्रीगणेश सबसे अधिक महत्वपूर्ण हैं यदि

वे (श्रीगणेश) नाराज़ हो जाएं तो उन्हें संभालना आसान नहीं है। श्री शिव के क्रोध को संभालना श्रीगणेश के क्रोध को संभालने से कहीं आसान है। उनसे सावधान रहें। यही कारण है कि कुण्डलिनी जागृति प्राप्त करते हुए आपको जलन महसूस होती है और आप उछल-कूद करने लगते हैं। यह सब श्रीगणेश के क्रोध के कारण होता है। किसी भी प्रकार से यदि आपने उनका अपमान किया है, या उनकी माँ (आदिशक्ति) का अपमान किया है तो उन्हें भयंकर क्रोध आ जाता है।

यह बात सत्य है कि निर्विकल्प स्थिति प्राप्त कर लेने पर श्रीगणेश वास्तव में जागृत हो जाते हैं। ऐसा व्यक्ति किसी महिला से सम्मोहित नहीं होता। अपनी पत्नी के अतिरिक्त किसी अन्य महिला के लिए उसमें कोई प्रलोभन नहीं रहेगा। अपनी पत्नी के साथ वह सम्मानमय पति की तरह से जीवन-यापन करेगा क्योंकि पति-पत्नी विवाह के सूत्र में बंधे होते हैं। अन्यथा वह एक पावन गृहस्थ होता है। उसमें शराब, धूम्रपान आदि के लिए कोई आकर्षण नहीं होता। वह तो प्रलोभनों से ऊपर होता है। निर्विकल्प व्यक्ति में कोई प्रलोभन नहीं हो सकता। एक व्यक्ति मेरे पास आया और उसने मुझे बताया कि वह आत्मसाक्षात्कारी था। मैंने कहा, "ऐसा कैसे हो सकता है? आप यदि आत्मसाक्षात्कारी हैं तो क्यों आपको इन चीज़ों की आदत है? आप ऐसा कर ही नहीं सकते।" मैंने कभी कुछ नहीं लिया। एक बार मेरे डाक्टर ने दवाई के रूप में मुझे थोड़ी सी ब्रांडी दी थी। मैं नहीं जानती कि मुझे बिना बताए क्यों उसने वह ब्रांडी मुझे देनी चाही, परन्तु उसके कारण मुझे खून की उल्टियाँ हो गई क्योंकि मेरा पेट ही धार्मिक और पवित्र है। मैं यदि किसी महिला को उत्तेजक करने वाले वस्त्र पहने हुए देख लूँ या ऐसा कुछ और देख लूं या अपने पति के साथ मुझे पार्टियों में या कैबरे आदि में जाना पड़े तो तुरन्त मुझे मितली होने लगती है मानो मैं नर्क में हूँ, विशेष रूप से तब जब हम वहाँ मुख्य अतिथि होते हैं। मैं उनका जीवन कष्टकर बना देती हूँ क्योंकि जब मैं अधनंगी महिलाओं को देखती हूँ तो मेरे पेट में कुछ हो जाता है। अब बात ये है कि मैं अपने पेट का क्या करूं क्योंकि इसमें तो धर्म उत्पन्न हो चुका है। अतः पेट स्वयं ही 'धर्म' बन जाता है। इस अवस्था में चीज़ों की सूक्ष्म शैली आरम्भ हो जाती है। आपका मूलाधार ही पावनता की मूर्ति बन जाता है। यह इन सब चीज़ों को सहन ही नहीं कर सकता। आपको उन्हें बताना नहीं पड़ता। ऐसी महिलाओं में आपको कोई दिलचस्पी नहीं रह जाती। वे न तो चोंचले बाजी करते हैं और न ही इन चीज़ों में उन्हें कोई दिलचस्पी रह जाती है। ऐसे वस्त्र पहनने में उनकी कोई दिलचस्पी नहीं रहती जो अन्य पुरुषों या महिलाओं को बहुत आकर्षित करें। अत्यन्त सहज व्यक्ति की तरह से वे आचरण करते हैं। वे गरिमामय सहजता में चले जाते हैं। अचानक वे अत्यन्त सृजनात्मक हो जाते हैं। मुम्बई में एक सज्जन हैं जिन्हें निर्विकल्प अवस्था प्राप्त हो गई है जब उनके पास कोई नौकरी नहीं थी तो वो मेरे पास आए। मैंने उनसे कहा,"क्यों नहीं आप गृह सज्जा कार्य शुरु कर देते? क्यों नहीं आप गृह सज्जा कार्य आरंभ कर लेते?" वह कहने लगा,"कि उसे लकड़ी का बिल्कुल ज्ञान नहीं है, एक लकड़ी से दूसरी लकड़ी का भेद भी वह नहीं जानता। मैंने कहा, अब आप निर्विकल्प में हैं। अतः यह कार्य शुरु कर लें।"

आज वह अत्यन्त वैभवशाली है। व्यक्ति गतिशील हो उठता है क्योंकि वह प्रकृति के सौन्दर्य को देखने लगता है। आत्मसाक्षात्कारी व्यक्ति में सौन्दर्यबोध (Aesthetic Sense) जागृत हो जाता है। हर चीज़ में वह सौन्दर्य देखने लगता है। बातचीत करने की कला सुधर जाती है। आपके हाथों की गति तथा आपकी शैली सुधर जाती है। आप अत्यन्त सुन्दर हो जाते हैं। आपमें सौन्दर्य बोध आ जाता है। अचानक व्यक्ति महान कवि बन जाता है। हमारे यहाँ दो ऐसे व्यक्ति हैं जिन्होंने सुन्दर कविताएं लिखी हैं। आप यदि चित्रकार हैं तो महान चित्रकार बन सकते हैं। चित्रकारी और सौन्दर्य के विषय में आपको नई धारणाएं प्राप्त हो सकती हैं। आपको संगीत अच्छी तरह से समझ आने लगता है, चाहे शास्त्रीय संगीत का ज्ञान आपको न हो फिर भी संगीत की सूक्ष्मता को आप समझने लगते हैं। शास्त्रीय संगीत से आपको ज्ञान होने लगता है कि आपकी आत्मा के लिए सर्वोत्तम क्या है? उस अवस्था में आत्मा हर चीज को परखने लगती है। ऐसे व्यक्ति को यदि आप नाटक या चित्रकारी का निर्णायक बना दें तो वह बिल्कुल सही-सही निर्णय देगा कि अच्छा क्या है और बुरा क्या है। उसके निर्णय को यदि आप विश्व भर के आलोचकों के सम्मुख रखेंगे तो वो लोग बताएंगे कि यह निर्णय सर्वोत्तम है। आप उनसे पूछेंगे कि,"उसको यह ज्ञान कैसे आता है?" क्योंकि वह चैतन्य लहरियों द्वारा तथा हर चीज़ से पूर्ण एकरूपता द्वारा यह महसूस कर सकता है।

ऐसे व्यक्ति को आप यदि किसी देवी-देवता की मूर्ति दें और उससे पूछें कि क्या ये मूर्ति ठीक है या गलत तो वह कह सकता है कि यह ठीक नहीं है। आप सूक्ष्म चैतन्य लहरियाँ महसूस कर सकते हैं चाहे वह धर्म में हों या कहीं और। क्या हम कह सकते हैं कि अष्ट विनायक जीवन्त देवता हैं? आपने कैसे जाना? ज्योतिर्लिंग जीवन्त हैं ये बात आप कैसे जानेंगे? जब तक आप सारी महान आत्माओं की एकरूपता को जान नहीं लेंगे किस प्रकार आप उन्हें परखेंगे? अत: आत्म-साक्षात्कार प्राप्त कर लेना आवश्यक है। मेरे पिताजी ने मुझे यही बताया था। मुझे कहना चाहिए कि वही मेरे प्रथम गुरु थे। वे आत्मसाक्षात्कारी थे। उन्होंने मुझे बताया कि वास्तविकताओं आदि के बारे में बात करने का कोई लाभ नहीं क्योंकि इस प्रकार तो तुम एक अन्य बाइबल या गीता का सृजन कर दोगी। तुम कोई व्यवहारिक कार्य करो। कोई सामूहिक तरीका खोजो। मैं जानती थी कि मेरा लक्ष्य यही है। अत: मैं सभी लोगों की कुण्डलिनी पर कार्य करती रही तथा उनकी गलतियों के कारण खोजने के लिए क्रमपरिवर्तन (Permutations & combinations) खोजती रही। आप हैरान होंगे कि बहुत से लोगों को कभी इस बात का पता ही नहीं चला कि वे निर्विचार समाधि में हैं। उन्हें कभी पता नहीं चला कि वे महान उन्नत आत्माएं हैं। उन्हें अगर इस बात का पता होता तो वो बहुत सी ऐसी बातें न बताते जिन्होंने आपको बन्धनों में फँसा दिया है। उन्होंने कहा,'सच बोलो'। सत्य कौन बोलेगा। उन्हें इस बात का ज्ञान न था कि मानव क्या है? वे अवतरण हैं, महान व्यक्ति हैं। मानव का उन्हें अधिक ज्ञान न था और न ही वे ये जानते थे कि मानव कितना चालाक होता है और किस प्रकार परस्पर विरोधी! सूक्ष्म मानव स्तर पर वे न आ सकते थे। इसके लिए उन्हें मानव रूप में आत्मानुभूति लेनी आवश्यक थी जैसे

मैंने की है। इसीलिए मैंने मानव प्रवृत्ति को समझा है परन्तु निःसन्देह मैं भी बहुत सी चीजें नहीं समझी।

जब आप निर्विकल्प अवस्था में जाते हैं तो आनन्द आपके अन्दर स्थापित होने लगता है। जब भी आप नगरों को देखते हैं, किसी सुन्दर तस्वीर या दृश्यों को देखते हैं तो तुरन्त आनन्द का एक तीव्र बहाव आप अपने अन्दर होता हुआ पाते हैं। ये परमात्मा की कृपा है कि आप इसी में रम गए हैं मानो गंगा आपके अन्दर बह रही हो और आप इसमें पूर्णतः निमग्न हैं। आपकी 'चेतना' ही 'आनन्द' बन जाती है।

वास्तव में आप समझ जाते हैं कि अभी-तक हमने 'सर्वव्यापी शक्ति' को जाना ही न था परन्तु अब हमें उसका ज्ञान हो गया है। इसे हम अपनी उंगलियों पर आते हुए महसूस कर सकते हैं। ये वास्तविकता है कि हमारे चहुँ ओर जो चैतन्य है वह सोचता है, समझता है, आयोजन करता है और प्रेम करता है। ज्ञान के एक भाग के रूप में आप ये सब जान जाते हैं। तब 'हृदय' से 'आनन्द' प्रवाहित होने लगता है। अन्ततः आप 'आनन्द' में 'विलय' प्राप्त करते हैं। यही तड़पन है विलय की। इस स्थिति में पूर्ण आत्मसाक्षात्कार घटित होता है। इस अवस्था में आप सूर्य, चन्द्र तथा सभी तत्वों (पंचतत्वों) को नियंत्रित कर सकते हैं।

इससे ऊपर परमात्म-साक्षात्कार है। (God Realisation) इसकी भी तीन अवस्थाएं हैं। अभी-अभी मैंने इसके विषय में बताया था, सत्-चित्त-आनन्द अवस्था। परमात्म साक्षात्कार वह अवस्था है जो गौतम बुद्ध तथा श्री महावीर ने प्राप्त की थी तथा वे हमारे मस्तिष्क में स्थापित हो गए। ईसामसीह भी वहाँ हैं। ये दोनों अवतरण नहीं हैं। मानव रूप में उन्होंने जन्म लिया। श्री सीताजी की कोख से लव-कुश के रूप में उन्होंने जन्म लिया तत्पश्चात् वे बुद्ध और महावीर के रूप में जन्में तथा एक बार फिर आदिशक्ति ही उनकी माँ थीं। इसके बाद हसन, हुसैन के रूप में फातिमा बी की कोख से जन्में। ये दोनों ऐसे मील के पत्थर हैं जिनके माध्यम से आप जान सकते हैं कि मानव कितनी ऊँचाई तक जा सकता है। आज वो अवतरणों सम हैं।

अन्य शैली के व्यक्तित्व भी हैं जैसे चिरंजीवी, भैरव, गणेश। ये सब अवतरण हैं। श्री हनुमान बाद में देवदूत गेब्रील के रूप में प्रकट हुए तथा भैरवनाथ सेंट माइकल के रूप में। नाम भिन्न-भिन्न हैं परन्तु व्यक्तित्व वही हैं। देवी भी अवतरित हुई, इसके विषय में कोई सन्देह नहीं है। वैज्ञानिक इस बात को नहीं समझेंगे परन्तु सहजयोगी इसे समझ सकते हैं क्योंकि वे तुरन्त उनकी चैतन्य लहरियाँ महसूस कर सकते हैं और प्रश्न पूछ सकते हैं। मेरे बारे में भी आप प्रश्न पूछ सकते हैं इससे आपको चैतन्य लहरियाँ प्राप्त होंगी। परन्तु इसके लिए कम से कम आपके अन्दर देवताओं को जागृत होना होगा और हाँ कहनी होगी। आपको साक्षात्कार प्राप्त हो या नहीं परन्तु उत्तर आपको निश्चित रूप से प्राप्त होगा।

परमात्मा आपको धन्य करें।